



कृपवन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्रधर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

जून 2017

मूल्य 15 रु.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

सांपला वाली गढ़ी में घड़ोई तालाब मन्दिर में
यज्ञ-सत्संग भण्डारे का विशाल आयोजन



इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी को फूल मालाओं से सम्मानित करते हुए ग्राम निवासी)

(विवरण पृष्ठ 5 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती



आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज



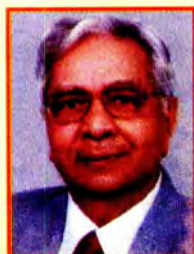
महात्मा हंसराज जयन्ती के अवसर पर जयपुर (राजस्थान) में अध्यात्म पथ के यशस्वी संपादक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी को 'वैदिक विद्वान्' के रूप में सम्मानित करते हुए आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कर्मठ मंत्री श्री एस.के. शर्मा जी। सम्मान रूप में श्री शास्त्री जी को शाल, प्रशास्ति पत्र, तुलसी का पौधा एवं 31 हजार रुपये की मानराशि प्रदान की गई। - डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया



वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के तत्वावधान में बेटी बचाओ जनचेतना अभियान के तहत 48वां कार्यक्रम सम्पन्न।

(विवरण पृष्ठ 4 पर)

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें



950

श्री ओमप्रकाश जी गुप्ता
अशोक विहार, दिल्ली



951

श्री नरेश जी लाकड़ा
मुण्डका, दिल्ली

952 मा. रामफल जी जांगड़, बेरी, पाना हिन्दुयान

प्रिय बन्धुओं! मास जून में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जुलाई अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक



आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

ज्येष्ठ-आषाढ़

सम्वत् 2074

जून 2017

सृष्टि सं. 1972949118

दयानन्दाब्द 193

वर्ष-16) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी
(वर्ष 47 अंक 6)

(अंक-6)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507



सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)



परामर्श दाता: गजानन्द आर्य



कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)



उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुरमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)



सदस्यता शुल्क

संरक्षक : 7100 रुपये

आजीवन : 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)

पंचवार्षिक : 700 रुपये

वार्षिक : 150 रुपये

एक प्रति : 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
गगन में तारे जोड़नेवाला	6
कल्याणभिलाषी अलं के महत्व को समझे	7
माता-पिता की सेवा कर लो/चल हट पाखण्डी बस्ती से	8
हवि एक अंक (ओंकार की प्राप्ति)-स्वाहा	9
प्रभु से माँगना बुरा नहीं	10
वेद मन्त्रों से ही, वेद ईश्वरीय ज्ञान है सिद्ध होता है	12
ब्रह्मज्ञान क्या है?	14
बहुमूल्य जीवन व्यर्थ के दिखावे से नहीं लोकोपयोगी....	15
'क्षमा' शब्द लुप्त क्यों हो रहा है?	18
भजन	19
परिवार में सुख शांति के उपाय: आपस का व्यवहार	20
भजन	22
एनीमिया पानी खून की कमी	24
क्रोध से बचें	25
बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ	26
मत रोको मेरी राह	28
हंसो और हंसाओं	28
वास्तुदोष और वास्तु शास्त्र	29
वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को शहीदे.....	30
दान सूची	32

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

बेटी बचाओ जनचेतना अभियान के तहत 48वां कार्यक्रम आयोजित

वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर के तत्वावधान में बेटी बचाओ जनचेतना अभियान के तहत 48वां कार्यक्रम राजकीय वरिष्ठ माध्यामिक विद्यालय बहादुरगढ़ में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य धर्मवीर शर्मा ने की। जबकि मुख्य वक्ता के रूप में अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षता कुमारी पूनम आर्या व संयोजक कुमारी प्रवेश आर्या मौजूद रही। कार्यक्रम का संचालन रमेश चन्द्र कौशिक व स्टाफ सदस्यों ने किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभाशाली छात्रों को महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया।

वक्ताओं द्वारा कहा गया कि विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ-साथ चरित्रिक गुणों का समावेश होना अति आवश्यक है। क्योंकि आज के समाज में चरित्रहीनता की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं जो कि इस बात की परिचायक हैं कि युवकों में चरित्रिक गुणों का अभाव है। चरित्रवान विद्यार्थी ही समाज व देश का भला कर सकता है और अपना जीवन व

भविष्य उज्ज्वल बना सकता है। इसलिए शिक्षक वर्ग का यह कर्तव्य बन जाता है कि शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को चरित्र का भी महत्व समझाएं। विद्यार्थियों को टीवी व इंटरनेट द्वारा परोसी जा रही अश्लील तस्वीरों से दूर रहने का उपदेश। ताकि आज का युवक पथ भ्रष्ट न हो और देश व समाज के लिए उपयोगी बने। इस दौरान स्वामी धर्ममुनि ने बताया कि विद्यार्थी अपने अवगुणों को त्यागें और सद्गुणों को अपनाएं। खंड शिक्षा अधिकारी मदन चौपड़ा आदि वक्ताओं ने बताया कि आज का युवक कल का भविष्य हैं। इसलिए यदि भविष्य को सुधारना है तो आज के युवा विद्यार्थी को हर क्षेत्र में आगे रहने के लिए प्रेरित करें। यहां आचार्य अजय खोखर, प्रमोद शर्मा, राजवीर सिंह, प्रवीण जाखड़, अमित दलाल, शकुंतला राजवंती, सुभाष आर्य, सैनी, कश्मीर सिंह, सुनील, चंद्रभान, सोनिया, उषा, सुनीता, नरेन्द्र सिंह, सत्यपाल वत्स आर्य, जितेन्द्र आदि मौजूद रहे।

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सैक्टर-33, नोएडा। गुरुकुल में नवीन सत्र 2017-18 के लिए अप्रैल 2017 से प्रवेश आरम्भ हो गया है। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एवम् उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद् लखनऊ एवम् सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित होगा। गुरुकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था। सम्पर्क सूत्र-0120-2505731

विश्ववारा संस्कृति के सदस्य बनें

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मुख पत्र मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका "विश्ववारा संस्कृति" का प्रकाशन किया गया है, वार्षिक शुल्क 250/- रुपये है।

सभी प्रबुद्ध आर्यों, सुधी पाठकों, सम्माननीय विद्वानों से आग्रह है कि पत्रिका को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज बी-69, सैक्टर-33, नोएडा का वार्षिक चुनाव सम्पन्न।

पुरुष समाज- रविन्द्र सेठ-प्रधान, कै. अशोक गुलाटी-मन्त्री, नरेन्द्र सूद-कोषाध्यक्ष
महिला समाज-गायत्री मीना-प्रधाना, आदर्श बिश्नोई-मन्त्रिणी, संतोषलाल आर्या-कोषाध्यक्ष

आर्य कैप्टन अशोक गुलाटी, महामन्त्री,

आर्य समाज, आषगुरुकुल, प्रबन्ध सम्पादक विश्ववारा संस्कृति, मो. 9871798221, 9555779591

यज्ञ-सत्संग भण्डारा आयोजन सम्पन्न

बुधवार 31 मई 2017 को सांपले वाली गढ़ी में घड़ोई तालाब मन्दिर में यज्ञ-सत्संग भण्डारे का विशाल आयोजन सर्वग्राम वासियों के सहयोग से किया गया। यज्ञ आचार्य विक्रमदेव जी के ब्रह्मत्व में मनुदेव शास्त्री एवं कर्ण आर्य द्वारा सम्पन्न करवाया गया। यज्ञ व्यवस्था चतुर्भुज बन्सल द्वारा संभाली गई। सर्वग्रामवासियों द्वारा श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की गईं। आत्मशुद्धि आश्रम के बालकों द्वारा मन्त्रोचरण सुनकर ग्रामवासी अत्याधिक प्रभावित हुए। मनुदेव शास्त्री द्वारा तैयार की गई बालिकाओं का भजन सुन्दर रहा। श्री स्वामी धर्ममुनि जी का जन्मभूमि में ग्रामवासियों द्वारा पूरे जोश के साथ मान सम्मान करने पर स्वामी जी ने धन्यवाद करते हुए कहा कि आप द्वारा इस तुच्छ सेवक का जो सम्मान किया गया है वह सारे गांव का, महर्षि दयानन्द आर्य समाज का वैदिक धर्म के सभी दिवानों का सम्मान है। मुझ सेवक पर जो ऋण चढ़ाया है अधिक से अधिक और जनता की सेवा करके आपके ऋण से उऋण होने का

स्मृति दिवस मनाये गए

श्रीमती सविता देवी आर्या बहादुरगढ़ जिला पटियाला पंजाब परिवार सहित शनिवार 3 जून आश्रम में पधारी। रविवार 4 जून को श्री महेन्द्र पाल जी आर्य का स्मृति दिवस यज्ञ के साथ सम्पन्न किया गया। बड़े सुपुत्र अश्विनी कुमार आर्य, श्रीमती कृष्णा देवी आर्या ने यजमान आसन से घृत को आहुतियां दी। परिवार यज्ञवेदी पर चारों ओर बैठ सामग्री की आहुतियां प्रदान की। श्री आचार्य विक्रम देव जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। स्वामी रामानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा आशीर्वाद दिया गया। परिवार द्वारा आश्रम को दान दक्षिणा रूप में सहयोग दिया गया।

इस अवसर पर श्री बृजलाल जी सहगल आश्रम द्वारा संचालन वैदिक वृद्धाश्रम में निवास करने वाले सबसे बड़ी आयु के 88 वर्षीय वृद्ध द्वारा अपने पूज्य पिता स्वर्गीय अमृत राम जी सहगल का 38वां स्मृति दिवस मनाया। आश्रम वासियों के लिए प्रातःराश की व्यवस्था की गई।

प्रयत्न करता रहूंगा। इस अवसर पर श्री स्वामी जी द्वारा परोपकार विषय पर सरल शब्दों में प्रभावशाली व्याख्यान दिया गया। श्री सत्यपाल जी वत्सार्य आश्रम उपमन्त्री, श्री राधेश्याम जी शर्मा, बहादुरगढ़ से श्री मा. करतार सिंह जी आर्य, श्री धर्मवीर जी दराल, श्री तेजपाल प्रधान टीकरी दिल्ली और भिन्न-भिन्न स्थानों से पधार कर भारी संख्या में लोगों ने कार्यक्रम में भाग लिया। भण्डारा मध्याह्न 11 बजे से रात्रि 10 बजे तक चलता रहा।
- मनुदेव शास्त्री

यज्ञ सत्संग सम्पन्न

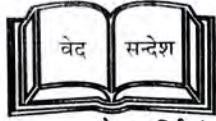
श्रीमती मायावती मदान आर्या परिवार धर्मपुरा, बहादुरगढ़ द्वारा मंगलवार 6 जून 2017 आत्मशुद्धि आश्रम की सुन्दर यज्ञशाला में श्री जगदीश जी मदान के छठे स्मृति दिवस पर यज्ञ-सत्संग का आयोजन किया गया।

अनमोल वचन

- ☐ बिना मांगे किसी को उपदेश मत दो।
- ☐ बड़ी बात को थोड़े में कहना ही चतुराई है।
- ☐ हम जो कुछ भी बोले, उसमें बल होना चाहिए।
- ☐ जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ धन कमाए हुए के बराबर है। इसलिए जिन्हें समय का मूल्य नहीं मालूम, वे दुनिया का कितना धन खो देते होंगे, इसका हिसाब कौन लगा सकता है?
- ☐ मधुर वाणी हो तो सब वश में हो जाते हैं। वाणी कटु हो तो सब शत्रु हो जाते हैं।

- (1) प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
- (2) सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें।

—विक्रमदेव शास्त्री



गगन में तारे जोड़नेवाला

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

आ पप्रौ पार्थिवं रजो, बद्बधे रोचना दिवि।
न त्वावाँ इन्द्र कश्चन, न जातो न जनिष्यते,
अति विश्वं ववक्षिथ॥ ऋग् 1.81.5

ऋषिः गोतमः राहूगणः। देवता इन्द्रः। छन्द पङ्क्तिः।
(इन्द्र परमेश्वर ने) (पार्थिवं) पार्थिव (रजः)
लोक को (आ पप्रा) आपूर्ण किया है, (दिवि)
द्युलोक में (रोचना) चमकीले नक्षत्रों को (बद्बधे)
बाँधा है, जड़ा है। (इन्द्र) हे परमेश्वर! (त्वावान्)
तुझ जैसा (कश्चन) कोई भी (न) नहीं (है)
(न जातः) न उत्पन्न हुआ है, (न जनिष्यते)
उत्पन्न होगा। [तू] (विश्वम् अति) विश्व को
अति-अन्त करके (ववक्षिथ) महान् है।

हे इन्द्र! हे परममहिमाशाली परमेश्वर! तुम्हारी
महत्ता का हम क्षुद्र मानव भला पार कहाँ पा सकते
हैं? तुमने पृथिवी-लोक को भी परिपूर्ण किया है
और द्युलोक को भी। तुमने पृथिवी लोक में एक-से
एक चामत्कारिक बहुमूल्य पदार्थ भरे हैं। मिट्टी,
पानी, पवन, अग्नि जैसे छोटे प्रतीत होनेवाले पदार्थ
भी हमारे लिए इतने मूल्यवान् हैं कि हम उनके
बिना रह नहीं सकते। तुमने पृथिवी पर हिम-गिरियों
को खड़ा किया है, सुरभित सुमनों वाले पौधों को
रोपा है, उत्तम फलवाले छायादार तरुणों को उगाया
है, आरोग्य-दायिनी ओषधियों और विविध अन्नों
को उत्पन्न किया है, कल-कल-निनादिनी
स्वच्छ-तोया नदियों को बहाया है, तुमने पर्वतों पर
झर-झर झरनेवाले झरनों को झराया है। तुमने पृथिवी
के गर्भ में हीरा, सोना, चांदी, लोहा आदि धातुओं
को, गन्धक, नमक, कोयला आदि खनिजों को तथा
पार्थिव समुद्र की सीपियों में मोतियों को भरा है।
तुमने मधुर, अम्ल, कटु, कषाय आदि रसों को पैदा
किया है। इस तुम्हारे पार्थिव कर्तृत्व को हम कैसे
भुला सकते हैं। साथ ही तुमने अन्तरिक्ष एवं द्यु-लोक
में सूर्य, चन्द्र, ग्रह, विद्युत आदि चमकीले पदार्थों
को भी बनाया है और तुम्हीं गगन-तल में तारों को

भी जड़ने वाले हो। तुमने आकाश में अपरिमित
भारवाले अगणित चमकीले पिण्डों को बिना ही
डोर के लटका रखा है और उनसे असीम प्रकाश
चारों ओर बखेर रहे हो। हे परम कलावित्! तुम
जैसा कोई कलाकार आज तक न कोई उत्पन्न हुआ
है, न भविष्य में उत्पन्न होगा। भ्रांत हैं वे लोग जो
तुम जैसे अनेक देवताओं की कल्पना करके परस्पर
कलह करते हैं कि हम शिव के अनुयायी हैं, हम
विष्णु के उपासक हैं। वस्तुतः हे इन्द्र! तुम्हीं विभिन्न
नामों को धारण करते हो। तुम्हीं ब्रह्मा हो, तुम्हीं
विष्णु हो, तुम्हीं शिव हो, तुम्हीं यम हो, तुम्हीं
काल हो। हे महिमामाय! तुम जैसा महान्, तुम जैसा
विश्व-स्रष्टा, तुम जैसा विश्वभर्ता, तुम जैसा
विश्वत्राता कोई नहीं है। तुम सारे जगत् को अतिकान्त
करके महान् हो।

- वेदमञ्जरी

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ
अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी
उपलब्ध है और दिव्य फार्मेशी पतंजलि उत्पादन
वस्तुएँ भी प्राप्त हैं।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा)

पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

कल्याणभिलाषी अलं के महत्व को समझें

- स्वामी धर्ममुनि जी

ओं ईडते त्वां अरङ्कृतः ॥ 1.14.5

प्रभु के उपासक वह हैं जो अपने को अरङ्कृत करते हैं।

प्रियपाठक बन्धुओं। उपरोक्त वेद सूक्ति बहुत सुन्दर सन्देश दे रही है, सूक्ति का भावार्थ है जो अपने को अलङ्कृत करते हैं, प्रभु के उपासक हैं, उनका ही कल्याण होता है, यहां केवल अपने तन शरीर को वस्त्राभूषणों से अलङ्कृत करने का भाव नहीं है। संस्कृत में 'अरङ्कृत' अलंकृत उसको कहते हैं जो 'अलं' बस करता है। अलं का अर्थ ही बस है। जो 'अलं' बस STOP करता है उसके महत्व को समझ लेगा वही जीवन अलंकृत है, सजा हुआ है। इस प्रकार जो अपने जीवन में अलं बस करते हैं वे ही सज्जन उस प्यारे प्रभु और सब जग से न्यारे प्रभु की उपासना कर सच्चा स्वराज्य प्राप्त करें। यदि आप अपना कल्याण करना चाहते हैं। तो चार बातों पर 'अलं' बस करें। Stop Break लगा दें।

1. अलं दर्शनेन- बहुत कुछ देख लिया देखना क्या रह गया वही सब कुछ है आखिर एक दिन अपने आप ही आंखें बंद हो जायेगी।

(आंख कान मुंह ढांप कर नाम निरंजन ले।
भीतर के पट जब खुले बाहर के पट दें।)

2. अलं श्रवणेन-बहुत कुछ सुन लिया सुनना बाकी क्या रह गया बस अंदर की आवाज सुनने का प्रयत्न करें।

3. अलं वदनेन-बहुत बोल लिये बोलना क्या बाकी रह गया। शांत चुप रहने का अभ्यास बनायें। अधिक बोलने वाला कभी भी आध्यात्मिकता में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। मौन के महत्व को समझें और मौनाभ्यास करें।

4. अलं चिन्तनेन-बहुत चिन्ताएं की बस अब चिन्तन ही करें। चिन्ता न करें। चिन्ता रूपी ज्वर के विषय में हमारे ऋषियों ने कहा है।

चिन्ता ज्वरो मनुष्यानां क्षुधां निद्रां बलं हरेत्।

रूपमुत्साह बुद्धिं श्री जीवितं न संशयः॥

ईश्वर पर विश्वास रखो किसी हिन्दी कवि ने बहुत सुन्दर कहा है-

'भरोसा रख प्रभु पर तुझे धोखा नहीं होगा।

ये जीवन बीत जायेगा तुझे रोना नहीं होगा॥

कल्याणभिलाषी बन्धुओं। अवकाश प्राप्त करना, रिटायर होना क्या है? बस, बस करना, स्टॉप करना ही है। आप विचार करें छः और शून्य लगकर 60 का अंक बनता है। आयुर्वेद के अनुसार 60 के बाद आयुक्षीण होने लगती है, रिटायर 60 साल के होने पर कर दिया जाता है। यहां भी उपरोक्त भावनाएं ही हमें संकेत दे रही हैं कि यदि कल्याण चाहते हो तो 60 साल के होने पर छः बातों पर शून्य लगा दो, जीवन में छः बातें शून्य करने से ही जीवन शान्त और आनन्द से व्यतीत होगा।

1. अहंकार- शून्य हो जाओ-अपनी डिग्रीयों का पद का कुर्सी का अहंकार छोड़ने में ही सुख आनन्द है, अब आप घर में हो कार्यालय में नहीं, आपके अधीन कार्य करने वाले यहां नहीं हैं जिन पर रोब डाल सकोगे।

2. रसना- रस शून्य हो जाओ। जिह्वा के स्वाद से बचे रहने में ही कल्याण है।

3. अज्ञान-अन्धकार शून्य हो जाओ! यह बात सदैव स्मरण रखें कि सांसारिक विषय सुखकर प्रतीत होते हुए भी परिणाम में दुःख रूप ही है, अतः विवेक-ज्ञान, स्वाध्याय-सत्संग से प्राप्त कर उनका त्याग कर बुद्धि को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अज्ञान-अंधकार से मुक्त करने का निरन्तर प्रयत्न करते रहें। आप का कल्याण होगा।

4. भार शून्य हो जाओ। पुत्र के भी पुत्र पैदा हो जाने पर घर का भार उत्तरदायित्व पुत्रों को सौंप दो और स्वयं उनके सहयोगी मात्र बनकर रहने में शान्ति मिलेगी।

5. अलंकार शून्य हो जाओ, फैशन दिखावा श्वेत बालों को काला रंगना, आभूषण एवं भड़कीले चमक-दमक के वस्त्रों के स्थान पर सतोगुण प्रकट करने वाली वेशभूषा में रहने में ही कल्याण है। बाहर का दिखावा न करके आन्तरिक सौन्दर्य की वृद्धि करने से जीवन अलंकृत होगा।

6. अंगीकार शून्य हो जाओ। अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकताओं से अधिक संग्रह की वृत्ति का त्याग करना मोह एवं आसक्ति से अलग रहना। बस इन छः

बातों पर शून्य लगाकर त्यागकर स्वाध्याय एवम् प्रभु भक्ति में लगे रहने से जन सेवा के कार्यों को करते हुए तप का अनुष्ठान करने से अवकाश प्राप्त होने पर निठल्लापन महसूस नहीं होगा जीवन में आनन्द मिलेगा।

शान्ति के इच्छुक बन्धुओं! अलं-बस, स्टॉप पर संक्षेप से प्रकाश डाला गया है, आप चिन्तन मनन करते हुए विषय को भली भाँति समझकर अलं के महत्व को समझें। महर्षि दयानन्द जी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पञ्चम समुल्लास में उपरोक्त सूक्ति के आधार पर ही लिखा गया है—“गृहाश्रम में ठहरकर निश्चिन्तात्मा और यथावत् इन्द्रियों को जीत के वन में बसें।” इन्द्रियों को जीतकर वन में बसें में उपरोक्त अलं दर्शनेन आदि चारों बातें और अवकाश प्राप्त करने पर छः बातों पर शून्य लगाने के भाव स्वतः प्रकट हो रहे हैं। आगे ऋषि लिखते हैं—“सब ग्राम के आहार और वस्त्र आदि सब उत्तमोत्तम पदार्थों को छोड़ पुत्रों के पास स्त्री को रख व अपने साथ लेकर वन में निवास करें। अलं इति विस्तारेण।

—धर्ममुनि

माता-पिता की सेवा कर लो

— ऋषि राम कुमार

पुराने बुजुर्गों ने हमको यह बात बताई है, माता-पिता की सेवा करलो, यही सच्ची कमाई है, कितना भी तू घूम ले बन्दे-चैन नहीं मिल पायेगा, पैसा कमाया जितना तूने-सब यहीं रह जायेगा, भले काम का भला नतीजा-सबने बात बताई है, माता-पिता की सेवा कर लो यही सच्ची कमाई है। तेरे कामों से लगता है-पाप का घड़ा भर रहा तू, जीवन है दो दिन का मेला-क्या करना

क्या कर रहा है तू,

सबको प्यार बांटते चलो-जीवन की यही सच्चाई है, माता-पिता की सेवा कर लो-यही सच्ची कमाई है। किसी प्राणी को दुःख मत दो-पूरे अपने जीवन में, दुश्मन कोई नहीं तुम्हारा-अपने सारे जीवन में, तेरा मेरा छोड़ दे बन्दे-सब अपने ही भाई है, माता-पिता की सेवा कर लो-यही सच्ची कमाई है। माता-पिता ने तेरे लिए सब कुछ अपना गवाया है, लोगों की बातों में आकर, मन तेरा भरमाया है, माता-पिता भगवान तुम्हारे रीत सदा चली आई है, माता-पिता की सेवा कर लो-यही सच्ची कमाई है।

— 112, सैक्टर-5, पार्ट-3, गुडगांव, हरियाणा-122001

चल हट पाखण्डी बस्ती से

चल हट पाखण्डी बस्ती से।

उखाड़ तेरी झण्डी जल्दी से॥

वैदिक सिद्धान्त तुझे उजाड़ेगा।

पाताल में तुझको गाड़ेगा॥

अब न तेरी यहां चलेगी।

और न तेरी दाल गलेगी॥

बहुत मुफ्त का खाया तूने।

सबको मूर्ख बनाया तूने॥

लूटा तूने सबको डट के।

खूब लगाये झूठे झटके॥

तू बस्ती कर दे खाली।

हटजा अब क्रूर कुचाली॥

विज्ञान ने यहां डेरा डाला।

खुलेगा सब तेरा घोटाला॥

ज्ञान का हुआ उजाला।

मुंह होगा तेरा काला॥

अब तर्क तुझे पछाड़ेगा।

और विज्ञान समूल उखाड़ेगा॥

सत्य से पड़ेगा पाला।

न्याय करेगा तेरा पड़ताला॥

अब पोल खुलेगी तेरी।

नहीं होगी कुछ देरी॥

चक्र जो तू चलायेगा।

उसमें ही फंस जायेगा॥

जयकार नहीं अब तेरी होगी।

जनता सब धिक्कार करेगी॥

डट कर तूने सबको लूटा।

तू है सबसे खोटा झूठा।

अब फूटेगा तेरा भाण्डा।

नहीं चलेगा झूठा हथकण्डा॥

—अम्बालाल विश्वकर्मार्य, विश्वकर्मा प्रतिष्ठान,
पिपलिया मंडी (मंदसौर),

हवि एक अंक (ओंकार की प्राप्ति)-स्वाहा

- महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

(इस लेख में महात्मा जी द्वारा स्वाहा शब्द की व्याख्या की गई है। स्वाहाकार से मन का अहंकार दूर होता है, उसके निकट कोई पाप नहीं आ सकता और ऐसा व्यक्ति प्रभु का आज्ञा पालक बन जाता है जो बहुत बड़ी उपलब्धि है-सम्पादक)

भक्त-आपने एक बार कहा था कि जो उपस्थित सज्जन मन्त्र नहीं भी जानते उनको भी 'स्वाहा' शब्द गुँजाकर बोलना चाहिए। ऐसा करने का क्या लाभ है?

महात्मा-स्वाहा का वर्णन करने से प्रथम जरा "इदन्न मम" शब्द जिसका पीछे वर्णन किया है, इस समय उसके सम्बन्ध में कुछ और याद आ गया है, पहले सुन लीजिए-

यज्ञ (अग्नि) में पड़ी आहुति विभक्त हो जाती है। विभाग में जब सारे का सारा बांट दिया जाए तो भागफल एक होता है, शेष शून्य रहता है, जैसे $3 \div 3 = 1$ और $3 - 3 = 0$ सारे में से सारा ऋण करने से केवल शून्य रहता है।

भाग में यज्ञ के अन्त में जब स्वाहा कहकर "स्व" अपना "आहा" त्याग दिया जाता है और "इदन्न मम" अर्थात् अपना ममत्व भी शेष नहीं रहता, "इदमग्नये" अर्थात् वह प्रभु का हो जाता है, तो प्राप्त भी वही एक अग्निस्वरूप प्रभु होता है। शेष शून्य के समान प्रकृति दिखाई देती है। यदि वह शून्य के समान प्रकृति दिखाई देती है। यदि वह शून्य (प्रकृति, माया) भी उठाकर एक के संग लगा दिया जाय अर्थात् उसे दक्षिणा में दे दिया जाय, तो वह शून्य भी (प्रकृति, माया) दस गुणा सामर्थ्यवाली हो जाती है, जैसे दस (10), अर्थात् वह यज्ञ करनेवाला अपना आत्मसमर्पण (स्वाहा) करता हुआ सब संसारी माया को शून्य समझे और उसे भी प्रभु-दक्षिणा में लगा दे, तो उसकी शक्ति दस गुणा हो जाएगी। लोग कहते हैं एक के साथ शून्य लग जाए तो एक कि शक्ति दस गुणा हो जाती है। किन्तु नहीं, एक तो एक है ही। शून्य की कोई शक्ति अकेली नहीं। अब यदि 10 से 1 हटा दे तो शून्य की कोई कीमत नहीं रहती। हाँ, दक्षिण में आ जाने से, एक की शरण से दस गुणा अवश्य बन जाती है।

शब्द 'स्वाहा' का महत्व

1. यज्ञ में 'स्वाहा' का शब्द जोर से मिलकर उच्चारण करने और आकाश गुँजाने का एक फल यह भी है कि मनुष्य के हृदय व मस्तिष्क में प्रत्येक समय कुसंस्कारों की तरंगें उठती हैं, परन्तु जब मन्त्रों की आहुति पर स्वाहा जोर से गुँजाया जाता है तो वह आवाज मस्तिष्क के अन्दर, एक लहर पैदा कर देती है। ऐसे ही वे शब्द आकाश में लहरें उत्पन्न करते हैं।

उस आवाज का काम यह है कि उठने वाले कुसंस्कारों की लहरों को वह आवाज काट डालती है और बाहर आकाश में अशुद्ध परमाणु जो मनुष्य के कुसंस्कारों का स्वागत करने के लिए दौड़ते हैं, वे शब्द उसे दूर-दूर भगा देते हैं।

संसार की हरेक वस्तु में उसकी सत्ता को प्रकट करने के लिए उसकी अपनी आत्मा होती है, जैसे सूर्य की आत्मा प्रकाश है। बिना प्रकाश के सूर्य नाम-रहित है और बिना प्रकाश दान करने से सूर्य निष्फल है, अतः प्रभु के सब देवता इसलिए देवता हैं कि वे अपनी-अपनी आत्मा को प्रभु की प्रजा के लिए त्याग कर रहे हैं। इस त्याग का नाम यज्ञ-परिभाषा में 'स्वाहा' कहलाता है, इसलिए प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'स्वाहा' कहा जाता है। जब तक मन्त्र के शब्द पढ़े जाते हैं तब तक तो चरु आदि हाथ में बन्द होता है, परन्तु जब 'स्वाहा' का शब्द मुख से निकलता है तो वह वस्तु अग्नि की भेंट हो जाती है और उसी क्षण वह फैलकर लघु से महान् बन जाती है। जब मनुष्य किसी दुःख में होता है तो उसका स्वरूप शब्द से प्रकट करता है, और जब वह खुशी की अवस्था में होता है तो 'अहा' कहता है किन्तु यह 'स्वाहा' शब्द निराला है! यह ऐसा अमोघ शस्त्र है कि इसको समझने से दुःख-सुख की सीमा से मनुष्य ऊपर उठ जाता है। मिलकर जोर से उच्चारण करने से जब आवाज आकाश में व्याप्त हो जाती है तो इसको

पश्चात् आकाश में “आ” ही सुनाई देता है जो प्रभु का नाम है।

प्राण जब अन्दर लिया जाता है तो “स-स” की आवाज निकलती है, और जब वह खुशी की अवस्था में होता है तो ‘अहा’ कहता है किन्तु यह ‘स्वाहा’ शब्द निराला है। यह ऐसा अमोघ शस्त्र है कि इसको समझने से दुःख-सुख की सीमा से मनुष्य ऊपर उठ जाता है। मिलकर जोर से उच्चारण करने से जब आवाज आकाश में व्याप्त हो जाती है तो इसके पश्चात् आकाश में “आ” ही सुनाई देता है जो प्रभु का नाम है।

प्राण जब अन्दर लिया जाता है तो “स-स” की आवाज निकलती है, और जब बाहर निकलता है तब

“हा-हा” की आवाज निकलती है। यह स्वाहा यज्ञ का प्राण है।

स्वाहा-अपना त्याग, अर्थात् मेरा-पन, किसी वस्तु और मेरे मध्य अहंकार ही स्वत्व को प्रकट करता है। जब मैं कहता हूँ कि यह मेरा मकान है तो यद्यपि मकान ईंटों का बना है, वे ईंटें पृथिवी से बनी हैं, वे मेरी नहीं, इसमें मेरा-पन अहंकार का कारण है। जब अहंकार का नाश हो गया या इसको त्याग दिया, या समर्पण कर दिया तो यही आत्मसमर्पण है जो अहंकार का नाश करता है। उसके निकट कोई पाप नहीं आ सकता, वह प्रभु का यन्त्र बन जाता है।

-साभार पवमान से

प्रभु से माँगना बुरा नहीं

- मनीषा विमल, 2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार, मो. 9760618162

प्रत्येक व्यक्ति यह प्रार्थना अवश्य करता है चाहे वह पौराणिक हो, अन्य धर्मी या आर्यसमाजी-

“त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव देवः।”

अर्थात् ईश्वर में आस्था व विश्वास, उसे अपना माता-पिता बन्धु सखा मानना तथा उसी को ज्ञान, ऐश्वर्य व अपना सब कुछ मानना। इसका यही अर्थ है कि सभी धर्मों के व्यक्तियों में ईश्वर के प्रति आस्था अवश्य होती है। इस बात का विश्वास होता है कि हमारे अस्तित्व का निर्धारण करने वाली कोई दिव्य शक्ति अवश्य है। यह सत्ता प्रकृति के सभी प्राणी जगत में किसी न किसी रूप में विद्यमान है। अब प्रश्न उठता है कि ईश्वर पर आस्था व विश्वास रखने से हमारा जीवन किस प्रकार सार्थक होता है।

गीता में कहा गया है-किसी से कुछ माँगना है तो ईश्वर से माँग क्योंकि परमात्मा से माँगना भी कोई साधारण बात नहीं है। एक बार बादशाह अकबर वन में अपनी टुकड़ी से बिछड़ गए, थके हारे प्यास से बेहाल एक खेत में बैठ गए। उसे खेत के किसान ने उन्हें पानी पिलाया, बादशाह आनन्दित हो गये, उन्होंने किसान से कहा, “तुम मेरे महल में आना तुम्हें

धनधान्य से भर दूंगा। कुछ समय बाद किसान को कुछ आवश्यकता पड़ी और किसी प्रकार राजमहल में राजा के पास पहुँचा। राजा उस समय हाथ उठाकर इबादत कर रहे थे। जैसे वह ऊपर को हाथ करके कुछ माँग रहे हों, यह स्थिति देख किसान जाने लगा। बादशाह ने इबादत पूरी होने के बाद उस जाते हुए किसान को रोका और पूछा-“तुम वापिस क्यों जा रहे हो?” किसान ने उत्तर दिया-“मैं अपने लिये आप से सहायता माँगने आया था किन्तु आप तो स्वयं ही उस ईश्वर से माँग रहे हो, सो मैं भी उसी से माँग लूँगा।”

किसान ने ईश्वर पर आस्था रखकर ईश्वर से प्रार्थना करी, समय पर वर्षा हो जाए तो मैं खेतों में बीज बो सकूँ। समय पर वर्षा होने से उसका ईश्वर में विश्वास दृढ़ हो गया।

मनुष्य अल्पज्ञ है, अज्ञानी है। समाज में रहने के लिए तथा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ता है। जब मानव को कोई राह नहीं सूझती तब वह भगवान से प्रार्थना करता है, अपनी समस्या का हल माँगता है, ऐश्वर्य की प्रार्थना करता है।

शास्त्र कहते हैं कि ईश्वर से भौतिक सुखों की याचना नहीं करनी चाहिए। बात ठीक भी लगती है। किन्तु ईश्वर में आस्था रखने वाला हर व्यक्ति भगवान को अपना माता-पिता कहता है। वह अपने माता-पिता मानकर

ही उनसे माँगता भी है। किन्तु जिस तरह माता-पिता अपने बच्चों की हर माँग पूरी नहीं करते, केवल वहीं माँग पूरी करते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, और उनके लिए उपयोगी होती है। क्योंकि माता-पिता को यह ज्ञात होता है कि किस समय बच्चों को किस वस्तु की आवश्यकता है, उनकी हर माँग पूरी न होने पर भी बच्चे बार-बार अनुनय विनय करते ही रहते हैं।

यही हाल साधारण मनुष्य का है। प्रत्येक व्यक्ति को कार कोटी धन माँगने पर परमात्मा वही देता है जिसके योग्य जो होता है। हाँ वह उसे पुरुषार्थ करने की प्रेरणा अवश्य देता है। उस पुरुषार्थ से व्यक्ति को जो कुछ भी प्राप्त होता है उसे ही वह ईश्वर की कृपा मान लेता है। एक गरीब मजदूर जो प्रातः से सायं मेहनत करके अपने परिवार के लिए प्रतिदिन रोटी जुटाता है तब उसके मुख से यही निकलता है।

“हे ईश्वर आज तो तूने मुझे मेरे परिवार को भोजन दिया है तेरा लाख-लाख धन्यवाद। कल भी मुझे काम दे देना।”

यह छोटी से प्रार्थना उसमें आत्मविश्वास भर देती है और ईश्वर को धन्यवाद देता हुआ अपने काम को पूरी निष्ठा से करने लगता है।

उपनिषदों व गीता में भक्ति के तीन प्रकार बताये गये। एक-सकाम भक्ति, दूसरी निष्काम भक्ति, तीसरी ज्ञानपूर्ण भक्ति। ज्ञानपूर्ण भक्ति प्रत्येक मनुष्य नहीं कर सकता क्योंकि यह बहुत उच्च कोटि की होती है। कुछ बिरले व्यक्ति ही कर पाते हैं। दूसरे प्रकार की निष्काम भक्ति मनुष्य अपनी इच्छायें त्यागने के बाद ही कर सकता है। यह भी प्रत्येक व्यक्ति जो समाज में साधारण जीवन जीता है-नहीं कर सकता है। कुछ उच्च स्तर की मनोवृत्ति वाले व्यक्ति ही कर सकते हैं, किन्तु तीसरे प्रकार की सकाम भक्ति प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है क्योंकि कोई न कोई इच्छा रखकर भगवान से जुड़ना, उसमें आस्था रखना, मान लीजिए किसी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा है समाज में यश पाना, उसके लिए वह ईश्वर से प्रार्थना करता है। वह यश उसे प्रार्थना से नहीं मिलेगा वरन् पुरुषार्थ से मिलेगा जैसे दूसरों की सेवा करना, दीन दुःखियों की सहायता करना, अस्पताल आदि बनवाना आदि। यदि इतना करने पर वह यश

की कामना करता है तो इसमें बुरा क्या है? धीरे-धीरे यश मिलने पर वह ईश्वर पर विश्वास करेगा ही। साथ ही अनचाहे ही दान आदि भावना से जुड़कर निष्काम भक्ति की ओर भी बढ़ता जाएगा क्योंकि ईश्वर में विश्वास रखकर कोई कार्य करने से तात्पर्य है मेहनत, ईमानदारी व लगन से किसी कार्य को करने का सर्वोत्तम प्रयास।

प्रातः कालीन वैदिक मन्त्रों का सार भी तो यही है। व्यक्ति प्रातः उठकर अपने लिये ईश्वर से ऊर्जा, धन, ऐश्वर्य की प्रार्थना करता है। एक मन्त्र है (ऋग्वेद 7.41.5)

“भग एव भगवां अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जोहववीति स नो भग पु एता भवेह॥”

भावार्थ-हे सकल जगत के ऐश्वर्य दाता आप हमारे गृहस्थ आश्रम में सत्य कर्मों को बढ़ाने वाले हों, जिससे हम समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त कर सकें तथा संसार के उपकार में तन मन धन से प्रवृत्त हो सकें।

मानव स्वभाव में तीन एषणायें होती हैं। एक-पुत्रैषणा, दो-वित्तैषणा, तीन-लोकैषणा। इनकी पूर्ति के लिए यदि मनुष्य ने प्रभु से याचना की तो इसमें बुरा क्या है। आखिर अपनी इच्छापूर्ति के लिए उसे कोई अवलम्ब तो चाहिए ही, जो उसकी इच्छा पूर्ति में सहायक हो, उसे उचित रास्ता बता सके। उसके लिए प्रभु से सहायता माँगना या प्रार्थना करके अपने अन्दर आत्मविश्वास प्राप्त करना क्या बुरा है। साधारण मनुष्य बिना किसीप्रयोजन के कोई कार्य नहीं करता, यह उसकी मनोवृत्ति है शेर भी भूख लगने पर ही शिकार करता है अन्यथा पड़ा सोता रहता है। मानव स्वभाव है कि उसकी छोटी सी इच्छा पूर्ण होने पर वह ईश्वर पर विश्वास करने लगता है और बड़ी इच्छापूर्ति के लिए पुरुषार्थ करने लगता है। इस तरह वह अनजाने ही मनोकामनापूर्ण होने पर दान, परोपकार आदि गुणों से जुड़ जाता है। यह सकाम भक्ति निष्काम भक्ति बन जाती है। अतः मेरे विचार से ईश्वर से कुछ माँगना कुछ बुरा नहीं है, मिलेगा तो वही जिसके लिए पुरुषार्थ किया है। किन्तु वह आस्था से जुड़कर अति उत्साह व लगन से अधिक पुरुषार्थ से जुड़ जाता है। अतः प्रभु से माँगना बुरा नहीं है।

वेद मन्त्रों से ही, वेद ईश्वरीय ज्ञान है सिद्ध होता है

— खुशहाल चन्द्र आर्य

भारतीय परम्परागत दृष्टि से वेद नित्य हैं और प्रभु की अमर व पवित्र वाणी हैं, अर्थात् वे अपौरुषेय हैं। अतः वेदों में ईश्वर, जीव और प्रकृति का यथावत् वर्णन है। इस विषय को स्वयं वेद घोषणा कर रहा है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। वे मन्त्र इसी भांति हैं:-

अन्वेको वदति यद्वदाति तद् रूपं

मिनन्तदय एक ईयते।

विथवा एकस्य विनुदस्ति तिक्षते यस्ताकृणोः

प्रथमं सास्युवथ्यः॥ (ऋ. 2.13.3)

हे मनुष्यो! जो अद्वितीय ईश्वर हमारे कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में वेदों का उपदेश करता है तथा जगत् का सर्जन, पालन और प्रलय करता है और जो अन्तर्यामी तथा अपार शक्ति वाला होने से सब निन्दाओं को सहता है, उसी सर्वोत्तम प्रशंसा योग्य ईश्वर की आप लोग उपासना करें।

दूसरा मन्त्र: यो स्त्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो

ब्राह्मणो नाधमानस्य कीरेः।

युक्त ग्राणो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य

सजनास इन्द्रः॥ 2.12.6

हे मनुष्यो! तुम संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के कर्ता तथा समस्त विद्यामय वेद का ज्ञान कराने वाले उस परमेश्वर की ही उपासना करो।

तीसरा मन्त्र: विवातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा

जुदूभिः सृण्या तुविष्वाणीः।

तृषुयदग्ने पनिनो वृषय।

से कृष्णांत एम रूशदूर्मे अजर। (ऋ 2.12.6)

सब मनुष्यों के प्रति ईश्वर कहता है कि मैंने जो वेदों में बताया है, वही तुम्हारा अपना स्वरूप है, ऐसा तुम्हें जानना चाहिए।

वेद की उपर्युक्त ऋचाओं से विदित होता है कि परमेश्वर संसार की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय का कर्ता है और हमारे कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में वेदों का उपदेश करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि कुरान और बाइबल को भी ईश्वरीय ज्ञान माना जाता है फिर क्या कारण है कि वेद को ही ईश्वरीय ज्ञान माना जाये और

बाइबल और कुरान आदि धर्मग्रन्थों को नहीं? अतः यह उपयुक्त प्रतीत होता है कि कुरान, बाइबल आदि धर्म ग्रन्थों को भी कसौटियों पर कसते हुए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जावें जिनसे सुधी पाठकों को यह निश्चय हो सके कि क्या कुरान, बाइबल आदि को भी ईश्वरीय ग्रन्थ माना जा सकता है या नहीं?

वेदादि समस्त आर्ष ग्रन्थों में परमेश्वर को न्यायकारी माना है। सारे कर्मों का फल ईश्वर पूर्ण न्यायपूर्वक, निष्पक्ष भाव से प्रदान करता है। इसलिए ईश्वर की संज्ञा न्यायकारी है। ईश्वर सम्पूर्ण संसार का स्वामी है। पूर्वकृत कर्मों के अनुसार संसार के समस्त प्राणियों के कर्मफल की यथावत व्यवस्था करना ही परमेश्वर का न्याय है। वेद में कहा है:-

विद्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः।

पश्यन् जन्मानि सूर्य॥ ऋ. 1.50.6

अर्थ- जिसके द्वारा सूर्य आदि जगत् रचा जाता है और सब प्राणियों के पाप-पुण्य रूप कर्मों को देखकर उनके यथायोग्य फल प्रदान किये जाते हैं, वही (ईश्वर) सबका सच्चा न्यायधीश राजा है, ऐसा सब मनुष्यों को जानना चाहिए।

अब कुछ उदाहरण कुरान के जिनसे ईश्वर न्यायकारी नहीं स्वेच्छाचारी जान पड़ता है।

1. अल्लाह जिसको चाहेगा क्षमा करेगा, जिसको चाहे दण्ड देगा, क्योंकि वह सबसे बलवान है। (म. 1.सि.3.सू.2.आ.884)

2. क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार करने वाला तौबा का। म.6/सि.24./सू.40/आ.2,3

3. अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे, निश्चय वह है क्षमा करने वाला दयालु। (म.6/सि.24/सू.34/आ. 54.60.64)

इन आयतों से सुधी पाठक ही समझ सकते हैं कि अल्लाह न्यायकारी है या स्वेच्छाचारी। अब बाइबल के कतिपय उदाहरण:-

1. पापियों के पाप क्षमा करना और उनके रोगों को दूर करना और कहना कि मैं धार्मियों के नहीं, परन्तु पापियों को पश्चाताप के लिए बुलाने आया हूँ।

(ई. म. प. 4/आ. 2.23॥ का भाव मात्र)

2. ईश्वर ने उसके कुकर्मों का स्मरण किया। जैसा तुम्हें उसने दिया है, तैसा उसको भर दे ओ। और उसके कर्मों के अनुसार, दूजा उसे दे ओ॥ (यो. प्र.प. 6/आ. 4.5)। इन आयतों से ईश्वर (God) न्यायकारी नहीं जान पड़ता।

वेदों के अनुसार परमेश्वर कृतज्ञता पाने के लिए अपराधी को क्षमा नहीं करता, न बदले की भावना से किसी को दण्डित करता है। उसकी न्याय व्यवस्था इतनी पूर्ण है कि उसमें यथायोग्य व्यवहार होने से न निर्दोष दण्डित हो सकता है और न अपराधी छूट सकता है। उदाहरण के लिए कुछ और वेद-मन्त्र:-

इदमाप प्र वहुत यत्किञ्चन दुरितं मयि।

यद्वाहम भिदुद्रोह यद्वा शेष उतानृतम्॥ ऋ 1.23.22

अर्थ: मनुष्यों के द्वारा जैसा पाप और पुण्य किया जाता है, वैसा ही ईश्वर की व्यवस्था से उन्हें फल प्राप्त होता है, यह निश्चय है।

**न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि।
न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिनं पर्वता निनमे तास्थिवांसः॥**

ऋ. 3/56/1

अर्थ- किसी की शक्ति नहीं कि जो ईश्वर के बनाये नियमों का उल्लंघन कर सके। जिसके भ्रान्तिरहित और शान्तियुक्त कर्म हैं, उसी दया के सागर ईश्वर

की सब उपासना करें।

उपर्युक्त प्रमाणों से विदित होता है कि वेद वर्णित परमेश्वर पूर्ण न्यायकारी है, वह पापों को क्षमा नहीं करता। जीवन के शुभा शुभ कर्मों का फल यथावत् देता है। बाइबल और कुरान में परमेश्वर पापों को क्षमा करने वाला है, अतः इन्हें ईश्वरीयवाणी नहीं कहा जा सकता।

यह लेख बहुत उपयोगी समझकर मैंने वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है जो स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्मप्रचार-प्रसार न्याय के द्वारा जयपुर से प्रकाशित होता है, उसके सहयोग से यह लेख लिखा है। कृप्या पाठकगण इसका पूरा लाभ उठावें।

- कै. गोविन्द राम आर्य एण्ड संस 180, महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजील, कोलकता-700007, मो. 22183825, 9830135794

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़, झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगावाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

ब्रह्मज्ञान क्या है?

एक दिन भगवान् कृष्ण के पास नारद जी आये, बोले-“भगवान्! मैं ब्रह्मज्ञान की बात पूछने आया हूँ। क्या है वह ब्रह्मज्ञान? क्यों हम ब्रह्म का दर्शन नहीं कर पाते।”

श्रीकृष्ण जी ने कहा-“अभी आये हो। थोड़ी देर बैठो, प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा।”

नारद जी बैठे, विश्राम किया, बोले-“अब दो मेरे प्रश्न का उत्तर।”

श्रीकृष्ण ने कहा-“आओ, जंगल में घूमने चलें, वहाँ बातें करेंगे।” दोनों निकल पड़े सैर को। घूमते-घूमते नारद जी काफी थक गए। प्यास भी सताने लगी। श्रीकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा-“नारद जी! आपको शायद प्यास लगी है, मुझे भी लगी है। आप कहीं से देखकर थोड़ा पानी ले आइए।” नारद जी बोले आप बैठिए, मैं अभी पानी लेकर आता हूँ। वे आगे गये तो उन्हें एक कुआँ मिला, जिसपर कुछ स्त्रियाँ पानी भर रही थीं। नारद जी ने पानी माँगा। एक युवती ने अपने घड़े से पानी पिला दिया। नारदजी पानी पी रहे थे और उसकी ओर देख रहे थे। देखते-देखते मन में मोह जाग उठा। पानी पी लिया तो एक ओर खड़े हो गये। वह लड़की घड़े को लेकर अपने घर को चली तो नारद जी भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। उसके घर पहुँचे तो लड़की के पिता ने उन्हें पहचानकर कहा-“आइये नारद जी! मेरे सौभाग्य कि आपके दर्शन हुए। अब भोजन किये बिना जाने न दूँगा।”

नारद जी भी यही चाहते थे, बोले-“भूख तो लगी है।” भोजन कर चुके तो बोले-“हम कुछ दिन तुम्हारे घर में रहें तो क्या हो?” लड़की के पिता ने कहा-“यह तो मेरा सौभाग्य है।”

नारद जी वहीं टिक गए। उस लड़की के रूप का मोह उन्हें पागल किये देता था। मन में जो गिरावट आ गई थी, वह और भी नीचे लिये जाती थी। एक दिन लड़की के पिता से बोले-“मैं चाहता हूँ कि इस कन्या का विवाह मेरे साथ हो जाय।” लड़की के पिता ने कहा-“महाराज! कन्या तो पराया धन है। मुझे उसका विवाह तो करना ही है। आपसे अच्छा वर उसे कहां मिलेगा? मैं विवाह कर दूँगा अवश्य, परन्तु मेरी एक शर्त भी माननी होगी और शर्त यह है कि विवाह के पश्चात् आप मेरे ही घर पर रहें, कहीं जायें नहीं।”

नारद जी को और क्या चाहिए था। रमते राम का कोई घर-घाट था नहीं। चिन्ता कर रहे थे कि

पत्नी को लेकर कहाँ जायेंगे? बना-बनाया घर मिल गया शर्त स्वीकार हो गई। विवाह भी हो गया। नारद जी अपने-आपको भूलकर ससुरालवालों के पशु चराते, उनके खेतों में काम करते। उन्हीं के घर में रहने लगे। इस प्रकार कितने ही वर्ष व्यतीत हो गये। गृहस्थी नारद के दो-तीन बच्चे भी हो गये। तभी एक दिन मूसलाधार वर्षा होने लगी। एक दिन, दो दिन, कई दिन होती रही। सब ओर जल-थल एक हो गया। शेष लोग कहां-कहां गये, यह नारद जी ने नहीं देखा। वह तो अपनी पत्नी और बच्चों को लेकर मकान की दूसरी मंजिल में चले गये। वहाँ भी पानी पहुँचा तो छत पर चले गये। परन्तु बाढ़ तो रूकी नहीं। पानी जब छत के निकट पहुँचा तो नारद जी ने समझा कि मकान अब बचेगा नहीं। पत्नी और बच्चों सहित पानी में कूद पड़े कि किसी ऊँचे स्थान पर जाकर प्राण बचायें। परन्तु ऐसा करते ही दो बच्चे डूब गए। पत्नी रोने लगी तो नारद बोले-“भगवान, रोती क्यों है? तू भी है, मैं भी हूँ, बच्चे और हो जायेंगे।” परन्तु तभी तीसरा बच्चा भी डूब गया। उसे ढूँढने के लिए नारद जी हाथ-पाँव मार ही रहे थे कि पानी का एक और रेला आया, पत्नी भी डूब गई। बड़ी कठिनता से नारद जी एक ऊँचे स्थान पर पहुँचे। वहाँ भी पानी था। थक बहुत गये थे। तैरने का अब प्रश्न उत्पन्न नहीं होता था, परन्तु धन्यवाद किया कि खड़े हो सकते हैं। पानी छाती तक था। तभी पानी ऊपर बढ़ा, कन्धों तक पहुँच गया, फिर ठोड़ी भी डूब गई। पानी होठों के पास पहुँचा तो नारद जी चिल्ला उठे-“हे भगवन्, मुझे बचाओ।”

तभी याद आया कि वे तो भगवान् कृष्ण के लिए पानी लेने आये थे। रोकर बोले-“क्षमा करो भगवन्।”

और तब कहानी है कि आँख खुल गई। नारद जी ने देखा कि कहीं कुछ भी नहीं है। वे जंगल में पड़े हैं। सामने खड़े श्री कृष्ण मुस्करा रहे हैं। मुस्कराते हुए उन्होंने कहा-“नारद जी! आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया है या नहीं?”

प्रकृति की वास्तविकता को समझकर इससे छुटकारा पा लेना ही ब्रह्मज्ञान है। इससे मुक्ति पाये बिना ब्रह्मदर्शन नहीं होता। परन्तु यह प्रकृति माया इतनी लुभाने वाली है कि इसके जाल में फँसा व्यक्ति तभी समझता है, जब नाक तक पानी आ जाता है।

बहुमूल्य जीवन व्यर्थ के दिखावे से नहीं लोकोपयोगी कार्यों से श्रेष्ठ बनता है।

— प्रदीप कुमार सिंह 'पाल'

इस संसार में हर व्यक्ति के अंदर स्वयं को अधिक श्रेष्ठ, अधिक सुन्दर, कुछ विशेष, सबसे हटकर प्रदर्शित करने का एक गुण छिपा हुआ है। इसे महत्वपूर्ण दिखाने का शौक भी कह सकते हैं। इस कारण हर व्यक्ति इसी कोशिश में लगा रहता है कि कैसे वह सबकी नजरों में ऊपर चढ़ जाए। दूसरों की नजरों में अच्छा दिखाने के लिए, अपनी छवि बनाने के लिए यदि व्यक्ति को अनैतिक कार्य भी करना पड़ता है, तो वह उसे करने से नहीं कतराता। इस तरह के किये गये अनैतिक कार्यों से वह अपने भविष्य के धरातल पर काँटे बोता रहता है, लेकिन उसे यह पता ही नहीं होता कि वह क्या कर रहा है और इसका परिणाम उसके लिए कितना दुःखदायी होगा।

यह सच है कि दुनिया दिखावे की है। यहाँ हर चीज दिखावट की वस्तु है। जो अपने को जितना सुन्दर दिखाता है, वह उतना ही श्रेष्ठ कहा जाता है, लेकिन वास्तविकता कुछ भिन्न है। भिन्नता यह है कि जो भी वस्तु या चीज बाहर से जितनी सुन्दर दिखाई जाती है या दीखती है, क्या वह अंदर से भी उतनी ही सुन्दर है? यदि है तो इससे सर्वोत्तम कुछ भी नहीं और यदि नहीं है तो यह केवल एक प्रकार का आडम्बर मात्र है। जो हमारी अंतश्चेतना पर एक ऐसा आवरण चढ़ा देता है, जिसके नीचे हमारी मौलिकता छिप जाती है और इसे हटाने के लिए हमें कठिन मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि यह एक ऐसा परदा होता है जिसे हमने स्वयं ओढ़ा है, खुद को स्वयं से दूर किया है। यह एक ऐसा अँधेरा होता है, जिसे हमने स्वयं आमन्त्रित किया है, भले ही हम उसे उस समय नहीं समझ पाते और उसके दुष्परिणाम को नहीं जान पाते।

हमको किसी से किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं है आप स्वयं जैसे हैं बिल्कुल सही हैं। बस हम खुद को स्वीकार करना सीखें। 'स्वयं के साथ प्रतिस्पर्धा' करके सर्वोच्च शिखर की ओर आगे बढ़ें। असली सवाल यह है कि भीतर हम

क्या हैं? अगर भीतर गलत है, तो हम जो भी करेंगे, उससे गलत फलित होगा। अगर हम भीतर सही हो, तो हम जो भी करेंगे, वह सही फलित होगा। सारी शिक्षा व्यर्थ है, सारे उपदेश व्यर्थ हैं, अगर वे हमें अपने भीतर डूबने की कला नहीं सिखाते। जिन्दगी को अगर हमें जाग्रत बनाना है, तो बहुत सी जाग्रत समस्याएँ खड़ी हो जाएंगी। लेकिन होनी चाहिए और अगर हमें जिन्दगी को जाग्रतरहित बनाना है, तो हो सकता है हम सारी समस्याओं को खत्म कर दें लेकिन तब आदमी मरा-मरा जीता है।

लोक हित का मार्ग अहंकार, बुद्धि व तर्क के विपरीत है। हालाँकि लोक सेवा बड़ी सुगम है, लेकिन जिनकी आँखों में आँसू हों, बस उनके लिए। लोक सेवा बहुत कठिन है, अगर आँखों में आँसू सूख गए हों। इस अभागे संसार में बहुतेरे ऐसे हैं, जिनकी आँखों के आँसू सूख गए हैं, जिनके पास आँखें हैं, लेकिन आँखों में पानी नहीं रहा, जो देखते हैं, लेकिन गहरा नहीं देख पाते, क्योंकि आँखों से भी ज्यादा गहरा आँखों के आँसू देखते हैं और जिनकी आँखों में आँसू नहीं रहे, उनकी आँखों के स्वच्छ होने की संभावना मिट गई। आँसू तो स्नान करा जाते हैं, आँखों को बार-बार ताजा करते हैं, धूल को जमाने नहीं देते, तर्क को टिकने नहीं देते, प्रतिभा का स्वतः परिष्कार कर देते हैं। व्यक्तित्व के कूड़ा-करकट को बहा ले जाते हैं। आँखें फिर ताजी हो जाती हैं, छोटे बच्चों की भाँति, फिर संसार हरा-भरा ताजा व नया हो जाता है। भावनाओं की इसी ताजगी में लोक हित की सुगन्ध मिलती है। अहंकार से लोक हित बिल्कुल विपरीत है। इसलिए जो अहंकार की खोज पर चले हैं, वे लोक सेवा की पुनीत भावना को न पा सकेंगे। लोक सेवा को पाना है तो स्वयं को खोना ही पड़ेगा।

दिखावे की ललक में किये गये अच्छे कार्य अपनी पवित्रता और उससे अर्जित पुण्य संपदा को खो बैठते हैं। आज की दुनिया में लोग अच्छा दिखना

चाहते हैं, लेकिन अच्छा करना नहीं चाहते। ऐसे कम लोग ही हैं, जो अच्छा दीखने के साथ अच्छा करना चाहते हैं। अधिकतर लोग ऐसे हैं, जो अच्छा दीखने के फेर में बहुत कुछ बुरा कर्म करते रहते हैं। अच्छा दीखने की चाहत व्यक्ति को अंदर से खोखला करती है और रिक्तता से भर देती है।

इस दुनिया में अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो दिखावे की दुनिया में जीते हैं। ये वास्तविकता जानते हुए भी उसे स्वीकार नहीं करना चाहते और किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए शॉर्टकट तलाशते हैं। कड़ी मेहनत और उसमें लगने वाले समय पर विश्वास नहीं करते और ऐसे तरीके ढूँढ़ते रहते हैं, जिससे जल्दी ही उन्हें फायदा मिले और कुछ करना भी न पड़े। ऐसे व्यक्ति अपने व्यक्तित्व की मौलिकता को विकसित नहीं कर पाते, अपनी क्षमताओं को भी निखार नहीं पाते, क्योंकि वे अपने आप से ही बहुत दूर हो जाते हैं।

दिखावे की इस दुनिया में रहने वाले यदि अपने जीवन में अच्छे कार्य करते हैं तो वह भी सिर्फ दूसरों को दिखाने के लिए करते हैं, ताकि लोग यह समझें कि वे कितने अच्छे हैं और इस दिखावे के कारण वे यदि कुछ अच्छा कार्य करते भी हैं तो उसका कुछ भी पुण्य उनके जीवन में संचित नहीं हो पाता, अर्थात् उनका जीवन पुण्यसंपदा से रिक्त ही रहता है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति एक बोतल रक्तदान दूसरों के लिए करता है, किन्तु वह अपनी फोटो खिंचवाकर पेपर में छपवाता है तो एक बोतल रक्तदान करने से जो पुण्य उसके जीवन में संचित होना चाहिए था, वह पेपर में फोटो छपाने, दूसरों की नजरों में ऊपर चढ़ने और उनकी वाहवाही पाने में चला जाता है।

इस संसार में धन-संपदा का मूल्य है, लेकिन उससे भी अधिक मूल्य उसके लोक हित के कार्यों का होता है। यह प्रत्यक्ष दिखाई तो नहीं देती, लेकिन निष्काम भाव से किए गए अच्छे कर्मों के माध्यम से संचित होती रहती है। जिस व्यक्ति में यह पुण्यसंपदा जितनी ज्यादा होती है, वह व्यक्ति भौतिक जीवन में उतना ही सफल, समृद्ध और प्रसिद्ध होता जाता है। ऐसे व्यक्तियों को सफल होने के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती, क्योंकि उनके अंदर की पुण्यसंपदा उनकी इच्छाओं को शीघ्र पूरा करती जाती है।

इसके विपरीत व्यक्ति के अंदर पापकर्मों की संपदा एकत्र हो जाने पर उसके जीवन में बीमारियाँ, असफलताएं, निराशा, अत्याधिक कष्ट-कठिनाइयाँ, कठिन चुनौतियाँ, कर्ज, अशांति, कलह बने रहते हैं और उसका जीवन उसे घोर नारकीय प्रतीत होता है। ऐसे जीवन से हर कोई दूर जाना चाहता है, लेकिन व्यक्ति के साथ जो है, वह उसके साथ रहेगा, चाहे वह कहीं भी जाए। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति को कितना भी अच्छा वातावरण मिल जाए, वह थोड़ी देर तो खुश रहेगा, लेकिन कुछ समय बीतने पर अपनी पहले वाली मनःस्थिति में वापस आ जायेगा। एक महापुरुष का कथन है कि “पाप अपने साथ रोग, शोक, पतन, पराभव, निंदा, तिरस्कार लेकर आता है।”

जीवन में मिलने वाली कष्ट-कठिनाइयाँ हमें अंदर से शुद्ध करती हैं, बुरे कर्मों के भोग को पूरा करती हैं और जीवन की सुन्दरता को निखारती हैं, लेकिन जीवन के कठिन समय को समझना, स्वीकार करना और उसे जीना बहुत कठिन होता है। उस समय अधिकतर व्यक्ति स्वयं को कोसने के साथ नकारात्मक विचारों व भावनाओं से भी घिर जाते हैं, जो उनके लिए अच्छा नहीं होता, लेकिन यह कठिन समय हमारे व्यक्तित्व को प्रकाशित करने के लिए आता है। इस समय हममें अपने जीवन को समझने का होश जाग्रत होता है और यह हमारे स्वयं के बोध को सामान्य क्षणों की तुलना में कुछ अधिक देकर जाता है, भले ही हम इसकी कीमत न समझ पाते हों।

जीवन में कभी ऐसा नहीं होता कि किसी व्यक्ति के अंदर केवल पाप संपदा हो या केवल पुण्यसंपदा हो। यह अच्छी या बुरी संपदा उसके बीते हुए समय में किए गए कर्मबीजों पर निर्भर करती है कि उसने किस तरह के कर्म किए हैं, तदनुरूप ही ही उसके परिणाम भविष्य में मिलते हैं। यह परिणाम कब और किस तरह मिलेंगे, यह जानना सबके लिए संभव नहीं है, क्योंकि हमारे जीवन के दशा एवम् दिशा हमारे अतीत में किए गए कर्मों के अनुरूप व्यवस्थित हो जाते हैं और फिर समयानुसार घटनाएं घटित होती रहती हैं, लेकिन एक अंतर्दृष्टि सम्पन्न अध्यात्मवेत्ता इसे आसानी से समझ सकता है।

लोक सेवी के अन्दर एक अजीब सी विकलता, विहलता एवम् भावाकुलता होती है। लोक सेवी की वाणी प्रत्येक सुनने वाले के अंतरतम व अंतर्मन को छू जाती है। सच को कहना, सच को स्वीकारना और सच को मानना, संभवतः लोक सेवी की पहली कसौटी है। लोक सेवा मानव जाति के लिए जीवन जीता है। वह अन्य सभी में भी अपने स्वरूप को ही देखता है। मानव जीवन के रूप में मिले सुअवसर को व्यर्थ के प्रदर्शन से नष्ट नहीं करना चाहिए।

न समझ पाना कोई अनहोनी नहीं है। हमारी बुद्धि, हमारी तर्कशक्ति, सांसारिक विषयों को, इनके हानि-लाभ को बड़ी सहजता से समझ जाती है, परन्तु जो विषय सांसारिक नहीं है, जिसमें सत्यता है, उसे समझ पाना बुद्धि व तर्क के बस में नहीं है। सत्य केवल हृदय की अनुभूति होती है। तर्क और बुद्धि के जाल की कोई सीमा नहीं है। यह जितना बढ़ता है। इसका कोई अंत नहीं है।

व्यक्ति का जीवन कैसा होगा, यह इसीलिए रहस्यपूर्ण है, क्योंकि आज हम जिस वर्तमान के धरातल पर खड़े हैं, वह अतीत की पृष्ठभूमि से पनपा है और आने वाले भविष्य का धरातल इसी वर्तमान की आधारशिला से उत्पन्न होने वाला है। यदि हम अपने जीवन को समझना चाहते हैं तो हमें अपने जीवन में ओढ़ी हुई उन परतों को पार करना होगा, जिनके भीतर हमारा अस्तित्व, हमारी मौलिकता छिपी हुई है। जीवन में अच्छे कर्म करने का सतत अभ्यास डालना होगा, ताकि हम उस पुण्यसंपदा को अर्जित कर सकें, जिससे हमारा जीवन सुरक्षित, शांतिपूर्ण, प्रकाशवान, बौद्धिक व सफल बन सके। इस संसार में वही सच्चे महापुरुष बने हैं, जिन्होंने दिखावे के जीवन का त्यागकर निष्काम भाव से लोकहित का मार्ग अपनाया है। अतः दिखावे की दुनिया से बाहर आकर हमें वास्तविक दुनिया में निष्काम भाव से जीना चाहिए।

1. रहे स्वच्छ और स्वस्थ- लोकप्रिय बनने के लिए स्वच्छ और स्वस्थ रहना प्रथम आधार है। बीमार रहने व दीखने वाले, मैले-कुचैले, अस्त-व्यस्त रहने वाले लोग कभी भी लोकप्रिय नहीं हो सकते। इसलिए

लोकप्रिय बनने के लिए पहली व्यवस्था यह जुटानी चाहिए कि अपनी स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए सजग रहें। यही बात जब आपसे दूसरे सीखेंगे तो स्वयं की उपयोगिता भी सिद्ध हो जाएगी।

2. बनें व्यवहारकुशल- इसके लिए सबसे पहले सजग, जाग्रत व प्रसन्न रहना पड़ेगा। प्रसन्नता भरी हलकी मुस्कान के साथ लोगों से व्यवहार करना सीखें। इसके लिए उदार व सहनशीलता बनें। कड़ुआहट का भी उत्तर मिठास भरा हो। लोग आपके व्यवहार से सहज ही अपनापन महसूस करेंगे।

3. संवेदनशील बनें- औरों के दुःख-दर्द को महसूस करना सीखें। अपनी कहने के साथ औरों की भी सुनें। दूसरों की समस्याओं और कष्टों की अनुभूति करना सीखें।

4. अपनी योग्यता व क्षमता का निरंतर विकास करें- अपनी योग्यता, प्रतिभा व क्षमता निरंतर विकसित करते रहें। ध्यान रहे कि योग्य, क्षमतावान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति ही औरों के लिए सहयोगी व उपयोगी बनते हैं और उन्हें ही लोकप्रियता मिलती है।

5. विचारशील बनें- विचारशीलता का यदि बहुआयामी विकास हो तो औरों को मार्गदर्शन दिया जा सकना संभव है। दुनिया में सच्चे हितैषी, हमदर्द व मार्गदर्शक नहीं मिलते। अपनी विचारशीलता और संवेदनशीलता के सहारे इस कमी को पूरा करें।

6. प्रामाणिकता सिद्ध करें- वचन का पालन, समय की पाबंदी ईमानदारी व सचाई का व्यवहार लेन-देन की सफाई, नारियों का सम्मान व उनके प्रति आदरभाव, लोक-मर्यादाओं का पालन, गोपनीयता की रक्षा, चुगली, निन्दा व ईर्ष्या से अरुचि व्यक्तित्व को सदा ही प्रामाणिक बनाए रखते हैं।

7. सदैव लोकोपयोगी बने रहें- लोग आमतौर पर उसकी ओर आकर्षित होते हैं, जिससे कुछ आशा होती है, प्रसन्नता मिलती है। जो भी आपके पास आए अथवा जिसके पास आप जाएँ, अपनी प्रतिभा व योग्यता से उसका हित अवश्य करें। साथ ही आपके पास का वातावरण प्रसन्नता से परिपूर्ण रहे।

- बी-901, आशीर्वाद, उद्यान-2, एल्डिको, रायबरेली रोड, लखनऊ, मो. 9839423719

‘क्षमा’ शब्द लुप्त क्यों हो रहा है?

- कृष्ण मोहन गोयल

क्षमा बड़नको चाहिए, छोटन को उत्पात,
का रहीम हरि को घट्यो जो भृगु मारी लात।

क्षमा के सम्बन्ध में हिन्दी जगत् के प्रसिद्ध महाकवि रहीमदास ने अपना प्रसिद्ध दोहा लिखा है जो सम्पूर्ण समाज को यह प्रेरणा देता है कि इस जिन्दगी में जाने-अनजाने में गलतियाँ तो हर मनुष्य से होती ही रहती हैं। इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम उसके द्वारा की गयी गलतियों को क्षमा कर दें इसी में हमारा बड़प्पन है। कभी आपने सोचा है कि हम अपने दैनिक जीवन में कितने लोगों को ‘क्षमा’ कर पाते हैं और कितने लोगों से अपने कृत्यों के लिए ‘क्षमा’ मांगते हैं।

‘क्षमा’ शब्द के लिए अंग्रेजी में प्रायः Forgiveness, Pardon, Sorry, Excuse me, उर्दू में ‘गुस्ताखी माफ’, जैसे शब्द प्रयोग किए जाते हैं। जिनका भाव होता है कि मुझसे जाने अनजाने में गलती हो गयी है, मुझे क्षमा कर दो। होता भी यही है कि जब किसी सभ्य, समझदार व्यक्ति से अचानक कोई गलती हो जाती है तो वह एकदम ‘क्षमा’, ‘सॉरी’ ‘गुस्ताखी’ माफ’ बोल कर अपने द्वारा की गयी गलती की क्षमा याचना करता है।

कभी आपने सोचा है कि जब हमसे किसी के प्रति कोई गलती हो जाती है तो हम चाहते हैं कि वह व्यक्ति हमें क्षमा कर दे। परन्तु जब हमारे प्रति किसी से कोई गलती हो जाती है तो हम यह चाहते हैं कि हम उसे दण्डित करें। ऐसा क्यों? क्या हममें इतनी क्षमता नहीं कि हम उसको क्षमा कर सकें।

कभी आपने कल्पना की है कि संसार में ऐसा कौन सा उपहार है जो अनमोल है और देने वाले के लिए बहुत ही आसान और सस्ता है, वह उपकार है किसी को उसके द्वारा जाने-अनजाने में की गयी किसी गलती के लिए उसको क्षमा कर देना। इस प्रक्रिया से जाने-अनजाने में गलती करने वाला तो अपनी गलती के लिए आत्मग्लानि तो अनुभव करता ही है परन्तु क्षमा करने वाला अपनी आत्मा

में कहीं अधिक सुख का अनुभव करता है।

याद कीजिए, द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरीका ने जापान के दो शहरों पर परमाणु बम से हमला कर विश्व का सबसे धिनौना कृत्य किया था। इस घटना से परमाणु बम के आविष्कारक आइंस्टीन ने सार्वजनिक रूप से सम्पूर्ण विश्व से क्षमा याचना करते हुए कहा था कि जीवनभर मुझको परमाणु बम बनाने का अफसोस रहेगा। मैं मानव जाति के प्रति क्षमा प्रार्थी हूँ।

भगवान राम भी वन जाते समय अपने नगरवासियों से हाथ जोड़कर क्षमा मांगते हुए कहते हैं-‘हुआ जो अपराध मुझसे सो ‘क्षमा’ कर दीजिएगा।’ यहां पर ‘क्षमा’ का अर्थ अपने द्वारा की गयी गलतियों के प्रति पश्चात्ताप करना है। यीशु मसीह, महर्षि दयानन्द, छत्रपति शिवाजी, स्वामी विवेकानन्द, गांधीजी आदि को जीवन में अनेक बार हिंसा का सामना करना पड़ा परन्तु उन्होंने हिंसा करने वालों को सदैव क्षमा करने का निर्णय लेने में जरा भी देर नहीं की। क्षमा मानव जीवन संजीवनी के समान अमृत वचन है तथा परोपकारी है।

क्षमा की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह शान्ति और सुख की जननी है और मनुष्य को अहंकार से मुक्त करती है जो मनुष्य के लिए एक सबसे कठिन कार्य है। इसके साथ ही साथ यह मनुष्य को सहनशीलता बनाती है। क्षमा हमारे अन्दर से ही विकसित होती है। इसको कोई पैदा नहीं करता है। यह ईश्वर की महान कृपा है, महान अनुभूति है। क्षमा के विषय में अपने भावों को व्यक्त करते हुए किसी ने क्षमा को बल, सम्बल, प्रबल, ज्ञान, दान, समाधन, मान, सम्मान, वरदान, शिक्षा, दीक्षा, कीर्ति, नीति, परिणति, कर्म, धर्म, सत्कर्म, सदाचार, धीरता, वीरता, गम्भीरता तथा सहिष्णुता आदि अलंकारों से विभूषित किया है।

प्रायः मार्ग में आपसे जाने-अनजाने में, किसी व्यक्ति का कोई नुकसान हो गया और केवल एक

शब्द सौरी बोलकर आगे बढ़ गए। क्या आपने कभी उससे पूछा है कि तुम्हारा कितना नुकसान हुआ है? इसी प्रकार कभी कोई व्यक्ति आपका नुकसान करके चला जाए और अपने किए हुए कृत्य के लिए क्षमा याचना न करे बल्कि उससे शिकायत करने पर वह आपको ही दोषी ठहराए तो आपको कैसा अनुभव होगा। उस व्यक्ति ने अपने किए हुए कृत्य के लिए क्षमा इसलिए नहीं मांगी क्योंकि उसे अपने धन, बल, पद, मान-सम्मान पर अहंकार है। अहंकार ही संसार में दुःख का सबसे बड़ा कारण है।

जैन धर्म में क्षमा और अहिंसा को बहुत महत्व दिया गया है और अहिंसा को 'परमोधर्म' बताया गया है। हिंसा से तात्पर्य केवल किसी को शारीरिक रूप से कष्ट पहुँचाना ही नहीं है अपितु यदि किसी को मानसिक या आर्थिक रूप से अथवा किसी अन्य प्रकार से भी पीड़ा या कष्ट पहुँचाया जा रहा है तो वह भी हिंसा ही कहलायी जाएगी। जैन मुनि अहिंसा के प्रति विशेष संवेदनशील रहे हैं। उनका मानना है कि जिस प्रकार से मनुष्य अपने प्राणों की रक्षा के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रयत्न करता है उसी प्रकार से प्रत्येक पशु, पक्षी, पतंग आदि प्राणी भी अपने जीवन की रक्षा के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयत्न करते हैं। कहीं उनसे किसी कीट पतंग की भी हिंसा न हो जाए इसके लिए वह अपने पैरों में रूई से बने हुए पाद पहन कर चलते हैं। प्रत्येक मानव का यही धर्म एवं कर्तव्य है कि वह प्रत्येक प्राणी के लिए संवेदनशीलता हो।

क्षमा के विषय में यह भी कहा जाता है कि द्रौपदी ने यदि अपने अपमान के लिए दुर्योधन को क्षमा कर दिया होता तो शायद इतना बड़ा महाभारत नहीं होता और इतना बड़ा नरसंहार नहीं होता और इसी प्रकार यदि रावण ने अपने कृत्यों पर राम से क्षमा याचना कर ली होती तो रावण के सम्पूर्ण वंश का नरसंहार ना होता और उसकी सोने की लंका आज भी विश्व में एक अद्भुत चमत्कार होती।

सबसे बड़े दुःख की बात तो यह है कि

सम्पूर्ण पृथ्वी पर अहंकार का प्रभाव तेजी से व्याप्त हो रहा है। जिस प्रकार मानव अब 'क्षमा' जैसे शब्द प्रयोग करना अपनी तौहीन समझता है। समाज में असहिष्णुता तेजी से बढ़ रही है और सहिष्णुता विलुप्त हो रही है। तो आइए, 'क्षमा' शब्द को अपने जीवन का अंग बनाएँ और स्वयं भी सुख से जिएँ और दूसरों को भी सुख से जीने का अवसर प्रदान करें। यही महापुरुषों के जीवन का मूल लक्ष्य है।

क्षमा बल है, क्षमा सम्बल है, क्षमा ही प्रबल है, क्षमा ज्ञान है।

क्षमा दान है, क्षमा ही समाधान है,

क्षमा मान है, क्षमा सम्मान है।

क्षमा ही वरदान है, क्षमा शिक्षा है,

क्षमा दीक्षा है, क्षमा रीति है।

क्षमा सत्कर्म है, क्षमा सदाचार है,

क्षमा भीरता है, क्षमा वीरता है।

क्षमा गंभीरता है, क्षमा सहिष्णुता है।

- 113, बाजार कोट, अमरोहा-244221

भजन

- ले. देवराज, आर्य मित्र हरिनगर

तू दया का सागर है, तेरी एक बून्द के प्यासे हम।

हो जाय कृपा दृष्टि, बन जाये ये जीवन सुगम॥

महिमा तेरी भगवन, अजब निराली है,

कहीं सूख रहे उपवन, कहीं छाई हरियाली है।

चहु ओर तेरा दृश्य देख रहे हैं हम॥

तू दया का सागर है.....

आकाश से धरती पर, अमृत बरसाता है,

अपने भक्तों के लिए फल-फूल उगाता है।

तेरी शरण में जो आया, मिट गये उसके सब गम॥

तू दया का सागर है.....

विषयों के भोगों में फंसे हुये हैं हम,

हमें ज्ञान का छींटा दो कहीं डूब न जायें हम।

गुणगणान करें तेरा और ध्यान करें हर दम॥

तू दया का सागर है.....

परिवार में सुख शांति के उपाय: आपस का व्यवहार

- अध्यापक देवराज आर्य, रोहतक मार्ग, जीन्द

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु सम्पन्नाः। जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तवान्॥ अथर्व. 3/30.2

पुत्र पिता का आज्ञाकारी, माता के मन को अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा हर्षाने वाला तथा पति और पत्नी के व्यवहार सत्य और मधुरता के ताने बाने में बुने हों, तो उस घर परिवार अर्थात् छोटे से संसार में सुख शांति और आनन्द की गंगा प्रवाहित होती रहेगी।

हमारे ऋषियों ने धर्म शास्त्र के आधार पर मनुष्य जीवन को चार भागों में विभक्त किया है, जिसमें ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद दूसरा गृहस्थाश्रम है। वैसे तो सभी आश्रमों की अपनी महानता है किन्तु गृहाश्रम सभी आश्रमों में ज्येष्ठ व श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो सन्तानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास कहां से हो सकते।

गृहाश्रम का उद्देश्य ऐहिक और पारलौकिक सुख प्राप्ति के लिए विवाह करके अपने सामर्थ्य के अनुसार परोपकार करना, नियतकाल में यथाविधि ईश्वरोपासना और गृहकार्य करते हुए सत्यधर्म में अपना तन, मन, धन लगाना तथा धर्मानुसार सन्तानोत्पत्ति करके उन्हें श्रेष्ठ और योग्य मानव बनाना है। परन्तु आज यह ज्येष्ठाश्रम सभी आश्रमों से हीन एवं दुःखी दिखाई दे रहा है। इस आश्रम में सुख तभी होता है जब स्त्री और पुरुष परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, धार्मिक, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों। हमारा गृहाश्रम कैसे सुखी हो, यह शिक्षा उपर्युक्त वेदमन्त्र के माध्यम से दी गई। पुत्र पिता का (अनुव्रतः) अर्थात् उसके व्रतों को पूरा करने वाला हो। कुल की श्रेष्ठ मर्यादाओं का पालक हो तथा माता के मन को संतुष्ट करने वाला आज्ञाकारी हो, पत्नी पति के साथ मीठी एवं शांतिप्रद वाणी बोलने वाली हो। तभी परिवार में सुखशांति की गंगा प्रवाहित होगी। पति भी इसी प्रकारपत्नी से सत्य एवं मधुर भाषण करने वाला हो।

1. व्रत किसे कहते हैं- अच्छे कामों को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्प करना व्रत कहलाता है। यज्ञोपवीत संस्कार के समय एक मन्त्र पढ़ा जाता है- और कहा जाता है कि जैसे अग्नि, सूर्य, चन्द्र, वायु आदि व्रतपति हैं, वैसे ही मैं भी 'अनृतात् सत्यमुपैमि' असत्य से दूर हटकर सत्य का ग्रहण करता रहूंगा। इस सत्य मार्ग पर चलने का नाम ही व्रत है। संस्कारों के

द्वारा ही मनुष्य के निर्माण का बार-बार प्रयत्न किया जाता है। वैदिक संस्कृति की सबसे बड़ी योजना और उस योजना का केन्द्र बिन्दु संस्कारों द्वारा मानव का निर्माण था ताकि शुभ संस्कार, शुभ रूचि और शुभ प्रवृत्ति के द्वारा पुत्र पिता का अनुव्रती हो जाए। जरा रामायण का अवलोकन कीजिये जब श्रीराम ने माता कौशल्या के पास आकर वन का राज्य मिलने की सूचना दी तो माता कौशल्या कहने लगी-पुत्र मेरी आज्ञा का पालन करो, और तुम वन में मत जाओ। परन्तु राम ने क्या उत्तर दिया-

सुन जननी सुत वही बड़भागी, जो पितु मात वचन अनुरागी रघुकुल रीत सदा चल आई, प्राण जाय पर वचन न जाई।

यह था वैदिक संस्कृति और संस्कारों का प्रभाव तथा पिता के वचनों को पूरा करने और 'अनुव्रतः पितुः पुत्रो' का ज्वलंत उदाहरण। जिनके तप और त्याग के कारण संसार के मार्गदर्शन हेतु एक महाकाव्य की रचना हुई।

सत्संग और स्वाध्याय भी मानव के निर्माण में अति आवश्यक हैं। तभी कहा गया है कि सत्संग से जीवन में मिठास पैदा होती है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह अमृत के तुल्य है। भक्त फूलसिंह का नाम तो आपने सुना होगा। वे एक पटवारी के पद पर कार्यरत थे। एक बार वे किसी स्थान पर आर्यसमाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आए हुए थे। प्रवचन के माध्यम से जब यह सुना कि प्रत्येक मनुष्य को अपने किए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। कोई भी व्यक्ति किसी भी अवस्था में उसकी न्याय व्यवस्था से बच नहीं सकता। यह सुनकर इनका हृदय बदल गया इन्होंने यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण किया और 'ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्' आदि

मन्त्रों के अर्थों को सुनकर असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करने का व्रत अर्थात् प्रण लिया। अपने कार्यकाल में लोगों से रिश्वत के रूप में जो धन लिया था वह वापस कर दिया तथा साथ ही घोषणा कर दी कि मैंने किसी भी रूप में किसी से रिश्वत के रूप में जो धन लिया था मैं उसे वापस कर रहा हूँ, भूल से यदि किसी के रूपये देने बाकी रह जाएं तो वह जरूर आकर मुझसे ले जाए और मेरे व्यवहार से किसी को आघात पहुंचा हो तो वह मुझे जरूर क्षमा कर दे। मैं क्षमा प्राप्ति हूँ।

प्रत्येक बच्चे को पुत्र बनने की योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। पुत्र का अर्थ-पुत्र+त्र अर्थात् पुत्र कहते हैं नरक या दुःख को तथा त्र का अर्थ है त्राण करने या रक्षा करने वाला। इस प्रकार पिता को दुःखों और कष्टों से बचाने वाला कुल की श्रेष्ठ मर्यादाओं को निभाने वाला पुत्र कहलाता है। पुत्र अपने पिता के, शिष्य अपने गुरुओं के तथा श्रोता अपने उपदेशकों के अनुव्रत होकर कार्य करें। अर्थात् उनकी अच्छी शिक्षा के अनुसार चलने का व्रत धारण करें। महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु विरजानन्द के समक्ष संसार में वैदिक प्रचार करने की प्रतिज्ञा ली तथा अपना तन, मन और जीवन लगाकर इस पावन व्रत को पूरा किया। मन्त्र के इस भाग में यही बताया गया है कि परिवार और संसार को सुखी करने के लिए पिता, आचार्य, गुरु तथा उपदेशकों के उपदेशों के अनुसार चलने का व्रत धारण करो।

2. दूसरी बात संतान द्वारा माता के मन को संतुष्ट करने व आज्ञाकारी होने की है। वास्तव में माता ही संतान का निर्माण करने वाली होती है। इसलिए कहा गया है कि माता निर्माता भवति। माता को जग जननी, विश्वकर्मा कहा है क्योंकि जितना स्नेह, मार्गदर्शन तथा भला बच्चों का माता करती है, उतना और कोई नहीं करता। माता कभी कुमाता नहीं हो सकती, पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, इसलिए माता के स्वरूप को समझने और उसे संतुष्ट रखने का हरसंभव प्रयत्न करना चाहिए। वेदों में माता को देव कहा गया है। अपने घर परिवार को सुखी बनाने के लिए आपने सुना होगा कि देवों की पूजा करना आवश्यक होता है। देवों की पूजा के बिना कभी सुख शांति नहीं मिलती।

यदि संकटों से बचना है तो देवों की पूजा करो, परन्तु ये देव हैं कौन? देव या देवता दो प्रकार के होते हैं। जड़ और चेतन। सूर्य, चन्द्रमा, पृथिवी, आकाश, वायु, जल आदि जड़ देवता कहलाते हैं। जड़ देवताओं की पूजा यज्ञ के द्वारा होती है। अतः प्रत्येक गृहस्थी को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिए। देव यज्ञ से अन्न, जल, वायु, वनस्पति तथा औषधियों शुद्ध होती हैं। उनमें शक्ति का संचार होकर वे अनेक प्रकार की बीमारियों को दूर करने में समर्थ होती हैं। अतः कष्टों से बचना चाहते हो तो यज्ञ आरम्भ करो। दूसरे जीवित माता-पिता, दादा दादी, गुरु आचार्य तथा धर्मोपदेशक अतिथि आदि चेतन देव कहलाते हैं क्योंकि इनसे ही संतानों को ज्ञान, बल, बुद्धि, विद्या, धन एवम् ऐश्वर्य के सभी सामान उपलब्ध होते हैं। इन चेतन देवों के तप और त्याग से ही हम सभी मानव जीवन जीने की कला सीखते हैं। हमें इनका कृतज्ञ होकर इनकी सेवा व पूजा अर्थात् सत्कार करना चाहिए। संसार में कोई कितना ही करे परन्तु फिर भी माता की सेवा का बदला नहीं चुकाया जा सकता। उपनिषदों में कहा गया है कि मातृ देवों भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव। धर्मशास्त्रों में माता को बहुत ऊँचा दर्जा दिया है कहा है-

नास्ति मात्रा समं तीर्थं नास्ति मात्रा समं प्रियः।

नास्ति मात्रा समं पूज्या नास्ति मात्रा समं गतिः॥

माता के समान कोई तीर्थ नहीं है जिसने तुझे शरीर रूपी नौका देकर और सुन्दर विचारों के चप्पू देकर संसार सागर से पार उतरने के लिए तेरा मार्ग खोल दिया है। माता के समान कोई प्रिय और पूज्य नहीं, जिसने अपने जीवन के सारे सुख तुझे सुखी रखने के लिए न्यौछावर कर दिए। जन्म से लेकर किशोरावस्था तक तेरे लालन पालन करने में मां ने कितने कष्ट उठाए होंगे, कभी बैठकर कर याद कर लिया करो। जिस व्यक्ति की मां जीवित है उसको कहीं दूसरे तीर्थों पर जाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि असली तीर्थ जिससे दुःखसागर से पार उतर जाएँ माता, पिता, आचार्य, वृद्धों और विद्वानों की सेवा तथा सत्यभाषण, विद्या तथा सत्संग, योगाभ्यास संयम और साधना हैं। शिवाजी को साहसी निडर और धर्मप्रेमी बनाने वाली माता जीजाबाई थी जिन्होंने उसे

एक योद्धा बनाकर देशधर्म और जाति की रक्षार्थ राष्ट्र को समर्पित कर दिया। श्रीकृष्ण को योगिराज बनाने वाली माता यशोदा थीं, जिन्होंने गीता के द्वारा संसार को कर्तव्य पालन का पावन संदेश दिया। इस प्रकार कितने ही उदाहरण माताओं के तप, त्याग तथा बलिदान के दिए जा सकते हैं। अतः सुखी जीवन जीने के लिए तथा परिवार की सुख समृद्धि के लिए पुत्र पुत्रियों को माता के मन के अनुसार श्रेष्ठ व आज्ञाकारी बनकर सेवा का शुभ व्रत लेना चाहिए।

3. मन्त्र के अन्तिम भाग में 'जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्' यह बताया गया है कि जहां गृह को सुखी बनाने के लिए संतान का आज्ञाकारी होना आवश्यक है, वहां घरों में पति पत्नी का व्यवहार भी मधुर एवं शांतिप्रद होना चाहिए। पत्नी को चाहिए कि वह पति के साथ मीठी वाणी बोले तथा मधुरता का व्यवहार करे। वह क्रोध से शून्य सदा प्रसन्नचित तथा उदारता की प्रतिमूर्ति हो। उसमें वाणी के ये चार दोष नहीं होने चाहिए।

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।

असंबद्ध प्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्॥ मनु,

कटु वचन बोलना, झूठ, चुगली और असंबद्ध प्रलाप करना ये वाणी के चार दोष हैं। स्त्री केवल पति के लिए ही नहीं, अपितु परिवार के सभी सदस्यों के साथ उक्त कटु व्यवहार न करे। इतिहास साक्षी है कि जब दुर्योधन इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों द्वारा बनाए सुन्दर महलों को देख रहे थे तो द्रोपदी ने दुर्योधन को अंधे का पुत्र अंधा कहकर कटु वचनों द्वारा असंबद्ध प्रलाप किया, जो नहीं करना चाहिए था। महाभारत होने के जहां और अनेक कारण थे, उनमें यह भी एक कारण बन गया क्योंकि दुर्योधन की अन्तरात्मा को इससे ठेस लगी। झूठ और चुगली के परिणाम कितने भयंकर होते हैं, आप सब जानते हैं। जरा रामायण पर ध्यान दीजिए। कल को राम का राजतिलक होने वाला है, मंथरा दासी को यह सब सहन नहीं हुआ। उसने रानी कैकेयी को झूठ और चुगली के द्वारा राजा दशरथ के विरुद्ध करके अपने दो वचन पूरे करने के लिए बाध्य कर दिया, जिससे राजा दशरथ की मृत्यु हुई तथा राम को वनवास जाना पड़ा।

आज अनेक परिवारों में भी इसी प्रकार की अनेक

बातें हो रही हैं। जिसके कारण परिवार टूट रहे हैं और दुःखी हो रहे हैं। पति भी पत्नी के साथ यथायोग्य मधुरता, समानता तथा सम्मानजनक व्यवहार को बनाए रखे तभी परिवार को एकता के सूत्र में बांधने और उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। जिनको कल्याण की इच्छा हो, वे अपने घरों में स्त्रियों को क्लेश कभी न दें क्योंकि:

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया॥ मनु,

जिस कुल में नारियों की पूजा, सत्कार होता है, उस कुल में दिव्य गुण, दिव्य भोग और उत्तम संतान होते हैं। जिस कुल में स्त्रियों की पूजा नहीं होती, वहाँ सब क्रियाएं निष्फल होती हैं। इस प्रकार एक श्रेष्ठ आचरण वाली गुणवान स्त्री परिवार और समाज को उन्नत और आनन्दित कर देती है। मन्त्र का सारांश यही है कि पुत्र पिता का आज्ञाकारी, माता के मन को अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा हर्षाने वाला तथा पति और पत्नी सत्य और मधुरता के ताने बाने में बुनें हों, उसे घर परिवार अर्थात् छोटे से संसार में सुख शांति और आनन्द की गंगा प्रवाहित होती रहेगी। जिसकी संसार को सदा से आवश्यकता रही है और रहेगी।

भजन

- कवि कृष्ण "सौमित्र" साहित्यलंकार,
मो.8901272846

जख्मों पर जख्म हम खाते रहे,
जिन्दगी फिर भी तुझको निभाते रहे

आस तोड़ी नहीं जिद ये छोड़ी नहीं
दौरे गर्दिश में भी मुस्कुराते रहे

वो भी एक दौर था ये भी एक दौर है
हर तरह टूटे दिल को बहलाते रहे

कब समझता है समझाने से पगला ये मन
दिल तड़पता रहा खुद को खाते रहे

सुख को देखा कभी तो कल्पनाओं में
दुख ही दुख में ये जीवन बिताते रहे।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ. नरफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुडगाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इन्स्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिश्चन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुडगाँव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सेनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओम्प्रकाश जी अग्रवाल, ईशान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र.
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु. श्री गजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र.
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुडगाँव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुडगाँव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुडगाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार, दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगाँव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा, गुडगाँव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीकर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो टूक यूनिन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डेंट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ़
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुडगाँव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुडगाँव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

एनीमिया यानी खून की कमी

- डॉ. विकास सकसैना

एनीमिया एक ऐसी बीमारी है, जिसमें शरीर में खून की कमी हो जाती है। शरीर में खून की कमी होने का मतलब है खून में हीमोग्लोबिन के स्तर का कम हो जाना। इस बीमारी में रक्त की आक्सीकरण क्रिया में कमी आ जाती है। आजकल एनीमिया से पीड़ित रोगियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती जा रही है। रोगी की आँख के अन्दर की झिल्ली या नाखूनों के अग्रभाग की लालिमा देखकर ही रोग का पता चल जाता है। ऐसे रोगी में निम्न लक्षण पाए जाते हैं-

लक्षण- (1) जरा-सी मेहनत या चलने पर थकावट महसूस होना। (2) दिन भर लेटे रहने की इच्छा करना। (3) जरा-सी तेज आवाज सुनते ही हृदय गति बढ़ जाना। (4) भूख में कमी व भोजन के प्रति अरुचि। (5) नींद न आना (6) सिर दर्द बना रहना। (7) त्वचा का रंग पीला पड़ जाना। (8) नीचे से ऊपर उठने पर चक्कर आना। (9) रोग बढ़ने पर टखनों में सूजन आना। (10) थोड़ा-सा चलने पर सांस फूलना।

कारण- (1) स्त्रियों में मासिक धर्म के समय अधिक रक्तस्राव होना। (2) दुर्घटना में रक्त बह जाना। (3) शरीर में पोषक तत्व, आयरन, फोलिक एसिड, प्रोटीन की कमी। (4) शरीर की चयापचय क्रिया में गड़बड़ी। (5) बवासीर के कारण खून का गुदाद्वार से बह जाना। (6) आँतों में छाले होने पर दस्त के साथ-साथ खून निकलते रहना। (7) प्रसव के समय अधिक रक्तस्राव होना। (8) पेट में हुकवर्म तथा मलेरिया के कीटाणु होने पर खून की कमी होना। (9) गुर्दे की खराबी के कारण। (10) थैलेसीमिया के कारण खून बनना ही बंद हो जाता है। (11) शरीर के किसी अंग जैसे-यकृत, अस्थिमज्जा के कार्यों में व्यवधान पड़ने पर खून बनना कम हो जाता है।

जाँच-शरीर में इस तरह के लक्षण दिखायी दें तो तुरन्त खून में हीमोग्लोबिन की जाँच कराएँ। एक व्यस्क व्यक्ति में हीमोग्लोबिन का सामान्य स्तर 13 या

अधिक होना चाहिए। वयस्क स्त्री में 12 या इससे अधिक है तो स्वस्थ है। हीमोग्लोबिन का यह प्रतिशत 100 मि.ली. आर.बी.सी. में है। हीमोग्लोबिन का अधिक बढ़ना भी शरीर के लिए खतरनाक है। इससे खून में गाढ़ापन आ जाता है जिससे रक्त कहीं भी थक्के के रूप में जमा हो सकता है।

आहार की उपचार- एनीमिया पीड़ित रोगी का आहार ही उपचार है। ऐसे रोगी के आहार में लौह तत्व (आयरन) की अधिकता होनी चाहिए। एनीमिया या रक्ताल्पता के रोगी को अपने आहार में निम्न खाद्य पदार्थों का समावेश कर लेना चाहिए।

(1) हरी पत्तेदार सब्जियाँ जैसे-मेथी, चौलाई, मूली के पत्ते, पुदीना इत्यादि में आयरन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। (2) अंकुरित अनाज लगभग 60 ग्राम प्रतिदिन नाश्ते में या भोजन के साथ लें। (3) गुड़ में लौह तत्व पाया जाता है। खाने के बाद मिठाई की जगह गुड़ खाएँ। (4) रात्रि में भीगी हुई अंजी, किशमिश में आयरन खूब होता है। (5) आयरन पाए जाने वाले खाद्य पदार्थों के साथ साइट्रिक एसिड युक्त पदार्थ नींबू, आँवला व संतरे का प्रयोग जरूर करें। इससे शरीर में आयरन का अवशोषण अच्छी तरह हो जाता है। (6) लोहे की कढ़ाई में खाद्य पदार्थों को पकाने से उसमें आयरन की प्रतिशत मात्रा बढ़ जाती है या जिन खाद्य पदार्थों में आयरन नहीं है, उनमें आयरन के गुण आ जाते हैं। (7) तिल में लौह तत्व प्रचुर मात्रा में होता है। सर्दी के दिनों में गुड़ व तिल मिलाकर लड्डू बनाकर खाने से खून की कमी कमी दूर होती है।

परहेज- (1) चाय का प्रयोग बंद कर देना चाहिए। चाय का प्रयोग करने से शरीर आयरन का अवशोषण नहीं कर पाता। (2) आयरन युक्त कैप्सूल का प्रयोग कम करना चाहिए। इनके अधिक प्रयोग से शरीर के कुछ अन्य तत्वों में कमी आ जाती है। (3) खटाई का परहेज रखें। जैसे-टमाटर, अमचूर आदि। (4) तले-भुने पदार्थ भी कम से कम लें।

क्रोध से बचें

- श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

क्रोध एक ऐसी चीज है, इसे न कोई करना चाहता है और न ही कोई दूसरे के क्रोध को सहन कर पाता है। क्रोध बहुत तबाही मचाता है। क्रोध आने से मन की शान्त स्थिति बिगड़ जाती है, मस्तिष्क की ग्रन्थियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। क्रोध के वक्त रक्त संचरण की गति तेज हो जाती है जिसका सबसे ज्यादा कुप्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है और उसे समय दिमाग काम करना बन्द कर देता है। क्रोध में आदमी वो कर बैठता है जो उसे कभी नहीं करना चाहिए। क्रोध में आदमी अति कटु शब्द व अति अप्रिय शब्द बोलता है। बाद में चाहे उसे शर्मिन्दा होना पड़ता है। क्रोध दूरियां बढ़ाता है, बीमारियों भी लाता है और खूब तोड़-फोड़ भी कराता है। घर में अगर कोई सदस्य क्रोधी होता है तो उसके डर से बाकी सच नहीं बोल पाते। अपने मन की बात समझा नहीं सकते, मन ही मन घुटते रहते हैं। क्रोध का मुख्य कारण मन की

निबलता है। इस निबलता की वजह से हम कठिन परिस्थितियों का सामना नहीं कर पाते। कटु वचन और कमजोर हालत को सहन नहीं कर पाते और क्रोध कर बैठते हैं। मन सबल हो तो सब कुछ सहन हो सकता है। मन की सबलता से हम अपनी व दूसरों की बात आसानी से समझ व समझा सकते हैं। जब आदमी पर काम का बोझ अधिक हो और कोई सहायता करने वाला न हो या फिर रात्रि की निद्रा अपूर्ण हो तो भी क्रोध आता है। क्रोध शब्द का पहला अक्षर है "क्रो" और अंग्रेजी में Crow का अर्थ है "कौवा" जो सदा कांव-कांव करता रहता है। उसी कांव-कांव से कोई भी खुश नहीं होता। इसलिए इस क्रोध रूपी कांव-कांव से बचे। अपने मन को शान्त रखे। जब क्रोध आने लगे तो गायत्री का जाप शुरू करें। क्रोध अपने आप शान्त हो जाएगा और आपका जीवन भी शान्तमय और शीतल होगा जो सभी को प्रिय होगा।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872



बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ

- मृदुला अग्रवाल

बच्चों का भविष्य तीन तरह की समस्याओं में उलझ कर रह गया है- (1) दूरदर्शन, फेसबुक, इन्टरनेट, चलभाष इत्यादि। (2) बाल्य-श्रम (3) बाल यौन-शोषण

बचपन मानव का निर्माण-काल होता है। एक बालक सफल मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसकी नींव सुदृढ़ हो। महर्षि दयानन्द जी "सत्यार्थ प्रकाश" के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि बालकों का सही निर्माण माँ के गर्भ से ही आरम्भ हो जाता है। बच्चों को उच्च संस्कार देने के लिए तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए, माता-पिता को अपने हृदय की इच्छाओं पर अंकुश रखकर गर्भ के समय से ही मर्यादा का पालन करना चाहिए। जैसे, महाभारत में अभिमन्यु को चक्रव्यूह-भेदन की शिक्षा माता के गर्भ में ही प्राप्त हुई थी।

**"मही द्यौः पृथिवी च नऽङ्गं यज्ञं मिमिश्रताम्।
पिपृतां नो भरीममिः॥" यजुर्वेद, अध्याय-13, मन्त्र-32॥**

भावार्थ-हे माता-पिता! जैसे बसन्त ऋतु में पृथिवी और सूर्य सब संसार का धारण, प्रकाश और पालन करते हैं, वैसे ही तुम दोनों अपनी संतानों को अन्न (शुद्ध आहार), विद्या-दान और उत्तम शिक्षा देकर पूर्ण विद्वान् पुरुषार्थी करो।

आजकल हमारे देश एवं समाज की अवस्था शनैःशनैः पतन की ओर अग्रसर हो रही है। रात-दिन बलात्कार हो रहे हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन और विलासिता में लोग डूबे जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता की ओर झुकाव सबसे बड़ी बाधा बन गया है। बच्चों का भविष्य तो नष्ट होता जा रहा है। "दूरदर्शन" पर युवतियों का आधुनिकता के चक्कर में अपने नश्वर शरीर की नुमाइश एवं कामुकता की हद को पार कर जाना भारतीय वैदिक संस्कृति पर कलंक जैसा है। समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में अश्लील व नंगी तस्वीरें, सबके घरों में हर उम्र के बच्चे देखते हैं, उन बच्चों के भावी सुचरित्र नागरिक बनने की संभावना को तिलांजलि देना है।

आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों (फेसबुक, इन्टरनेट, चलभाष इत्यादि) से बालकों को एक तरफ उन्नति करने का अवसर मिला है तो दूसरी तरफ उससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। बालक के जीवन का सबसे अहम् स्थान स्कूल है। वहाँ का वातावरण सीधा उनके मन पर प्रभाव डालता है। उन्हीं स्कूलों में "इन्टरनेट" को अनिवार्य घोषित किया जा चुका है। इन्टरनेट पर पढ़ाई के अलावा भी तो नाना प्रकार के अनुचित मार्ग पर ले जाने वाले आकर्षण हैं। इन सबकी वजह से बालकों का जीवन तो अनैतिकता के गर्त में जा गिरा है। ऐसी परिस्थिति में माता-पिता-आचार्य का उत्तरदायित्व होता है कि बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। अच्छे संस्कार देते हुए उनको सदाचार से युक्त, सुयोग्य एवं लायक बनावें। "माता निर्माताः भवति" माता बच्चे की प्रथम गुरु है। माता को उन्हें कुकर्मा से बचाना होगा, किसी भी अंग से कुचेष्टा न करने पावे ऐसा प्रयास करना होगा। उन्हें सत्यभाषण की आदत डालें, मादक-द्रव्यों से दूर रखें। ऋग्वेद, मंडल-7, सूक्त-2, मन्त्र-11 का भावार्थ:- "हे विद्वान्! जैसे सूर्य का प्रकाश दिव्य गुणों के साथ नीचे भी स्थित हम सबों को प्राप्त होता है और सत्य विद्या से युक्त उत्तम संतान वाली माता सुखपूर्वक स्थित होती है, वैसे ही विद्वान् हम सबों को, विशेषकर बालकों को, आप प्राप्त होकर अच्छी शिक्षा से सुखी कीजिये।"

स्वस्थ सामाजिक वातावरण एक बालक के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। परन्तु आजकल का आधुनिक समाज उसी बालक को "बाल्य-श्रमिक" बनाकर स्वयं को गर्वित महसूस कर रहा है। "बाल्य-श्रम" पूरे विश्व की समस्या है। बाल्य-श्रम का उद्योगिक-क्रान्ति में भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बच्चों को बाल्य-श्रमिक बनाने के दो मुख्य कारण हैं:- (1) गरीबी और (2) शिक्षा का अभाव। इन दोनों कारणों की वजह से, मजबूरी में, आज लाखों-करोड़ों की संख्या में इन मासूम एवम् सरल

बच्चों से हानिकारक रासायनिक पदार्थों के मध्य कल-कारखानों में, घरों में, चाय दुकानों में, ढाबा में, तरह-तरह के अत्याचारों को सहन करते हुए काम करवाया जा रहा है। बच्चे पूरे विश्व का भविष्य हैं। उन्हें कितनी जिम्मेदारियां सम्भालनी हैं-परिवार की, समाज की, राष्ट्र की एवं विश्व की भी। अगर बचपन में ही बाल्य-श्रमिक बन जायेंगे तो कैसे अच्छे तथा प्रतिष्ठावान नागरिक बन पायेंगे। भारत में बाल (Child Rights and You) के स्वयं सेवी इस समस्या का समाधान निकालने की चेष्टा तो कर रहे हैं। परन्तु सरकार का भी उत्तरदायित्व है कि गरीबी के कारण बच्चों की शिक्षा में अभाव न आवे।

अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-28, मन्त्र-3, 4,5 के अनुसार माता-पिता प्रयत्न करें कि संतान उत्तम गृहस्थ बने, जितेंद्रिय होकर अपने दोषों और दूसरे शत्रुओं का नाश करें। अन्नभाव, बलवान एवं धनवान बनें। विद्वान लोग उचित शिक्षा से उनकी रक्षा करें। प्रकृति से उपकार ग्रहण करके संसार में प्रवेश करें एवम् आनन्द भोगें।

“बाल-यौन-शोषण” बच्चों के लिए एक बहुत ही जटिल समस्या है। ज्यादातर घरवाले ही यह काम करते हैं। बच्चों को किस तरह सुरक्षित रखा जाये-यह एक बड़ा प्रश्न है। घर-घर में जाकर घरवालों को, बच्चों के माता-पिता को, स्कूलों में शिक्षकों को, अन्य वयस्कों को इस विषय में जानकारी देना बहुत जरूरी है। जिससे वे बच्चों की सुरक्षा करने को अपना कर्तव्य समझें और उसको निभाने का हर सम्भव प्रयास करें। बच्चों को सतर्क करना होगा। उन्हें शरीर के गुप्त अंगों के बारे में प्रशिक्षण देना होगा, जिससे कोई उन अंगों कोई रोग हुए तो वे निर्भीकता से दूसरों को बोल सकें। हमें इसके लिए बच्चों के साथ मित्रों जैसा व्यवहार करना होगा। उन्हें विश्वास दिलाना होगा कि जब भी उन्हें जरूरत हो हम उनकी मदद के लिए सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। बच्चे निश्चयात्मक प्रशिक्षण के द्वारा आत्म-विश्वास एवं निर्भयता से अपने विश्वासपात्र को पहचानें वा चुनें तथा उनसे अपनी समस्या की चर्चा भी करें। उन्हें ये भरोसा रहे कि वे जब चाहे हमारे पास आ सकते

हैं, अपनी गलतियों को भी बता सकते हैं। दरअसल हमारा सामाजिक वातावरण कुछ ऐसा निर्मित है कि बच्चे बड़ों के सामने कुछ बोल नहीं पाते। बड़े जो करें वही सही है-यह बात बच्चों के मन में कूट-कूट कर भरी रहती है। इस वजह से बड़े ऐसा कार्य करें (यौन-शोषण का) तो भी बच्चे डर से कह नहीं पाते। उसका शिकार होते चले जाते हैं। यह कार्य एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जारी रहता है। अगर बच्चों को बचपन में ही नियंत्रित न किया जाये या उनका डर न मिटाया जाये तो उनका सम्पूर्ण जीवन इससे प्रभावित होकर भावनात्मक एवं मानसिक प्रतिक्रियों से नष्ट हो सकता है। उन्हें यह अनुभूति न होवे कि उनके साथ विश्वासघात हुआ है। बच्चों का दुरुपयोग करनेवाले व्यक्ति को चेतावनी देना जरूरी है। बच्चों को अपने माता-पिता से बातचीत करने का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आजकल माता-पिता को अपने बच्चों की बातें सुनने की फुर्सत नहीं मिलती या वे उनकी बातें सुनना ही नहीं चाहते। समस्याओं से मुँह न फेरकर, सकारात्मक विचारों के साथ हमें उसका समाधान निकालना होगा और बच्चों के जीवन को सुधारना होगा जो कि सम्भव है। लाखों-करोड़ों बच्चों की यह समस्याएं हैं जो दुःखभरी हैं पर हैं सच्ची।

स्वामी दयानन्द की आदर्श शिक्षा एवं वेदों के अध्ययन की आवश्यकता है। वेदों में सांसारिक एवं पारमार्थिक उन्नति दोनों का परिपूर्ण उपदेश प्रस्तुत है। स्कूल एवं कॉलेज में अगर वैदिक शिक्षा और संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य कर दिया जावे तो एक सम्भावना की आशा की जा सकती है कि देर-सबेर बच्चों में धीरे-धीरे सुधार आ जावेगा। एकत्व, मित्रता, शान्ति, व्यवहारिक ज्ञान की जीवन में प्रधानता होगी। विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करना माता-पिता आचार्य एवं सम्बन्धियों का प्रमुख कर्तव्य है। आध्यात्मिक विचारशक्ति एवं प्रभु भक्ति से उनके जीवन को विकसित करना होगा। वेद-विरूद्ध आचरण का निषेध कर, गुरु एवं विद्वान् लोग अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से, राष्ट्र के भावी नागरिक अर्थात् बच्चों के भविष्य को समस्या रहित करके चमका दें।

- 18 सी, सरल बोझ रोडद्व कोलकता-70020

मत रोको मेरी राह

- राज कुमार अरोड़ा

मैं समय हूँ, मैं प्रलय हूँ
रोकना मुझको कठिन है
टोकना मुझको कठिन है
आता हूँ जब मौज आये
जाता हूँ जब मौज चाहे
मोड़ना मुझको कठिन है।
रात है तो दिन भी होगा,
शाम है होगा सवेरा
शूल में से फूल चुनना
है यही वीरत्व मेरा।
मैंने है इतिहास देखा
कृष्ण देखा, कंस देखा
राम और हनुमान देखा
लंका का परिणाम देखा
महाबली रावण कहां है?
समय सबको खा गया है
गीत केवल गा गया है।
वक्त का पहिया बदल कर
मोड़ लेने आ गया है
सादगी ईमान जिनका
सत्यथा भगवान् जिनका
मरण नहीं है, वरन उनका
नाम ऐसा पा गये वे
समय को भी खा गये वे।
पर नहीं बलवान हूँ मैं,
समय हूँ तूफान हूँ मैं
बरू यही मन में चाह
तुम मत रोको मेरी राह।

वक्त की लहरों ने
भारत की माटी को जब भी पुकारा है
माँ के लाडलों ने
शहीद परवानों ने
अलबेले मस्तानों ने
तब ही हुंकारा है
अत्याचारी औरंगजेब हो
या कि नादिरशाह।

हंसो और हंसाओं

- रवि शास्त्री

1. वेटर-सर, क्या ऑर्डर है?
लड़का-मेरे लिए बटर, चिकन, पनीर टिका
और पराठा।
वेटर-और मैडम के लिए?
लड़का-वो भाव खाती हैं।
2. सुरेश-आजकल छोटे बच्चे भी कमाल हैं कोई
डांस में तो कोई सिंगिंग में धुम मचा रहा है।
नरेश-हमारा बचपन तो बस छत पर चढ़ कर
एंटीना घुमा के चिल्लाने में बीत गया-"अब
साफ आया क्या?"
3. पत्नी-देखो मैं इसे पिछले 7 साल से लगातार
पहन रही हूँ फिटिंग वैसी की वैसी है और तुम
मुझे मोटी मोटी कहते रहते हो।
पति-भगवान से डर..... ये शॉल है।
4. मालिक तोते से-मिट्टे जलेबी खानी है।
तोता-अपनी पत्नी को खिला पहले मिर्ची खिल
खिला कर बवासीर कर दी अब जलेबी खिलाकर
शुगर करना चाहता है।
5. पत्नी-मेरी जीभ पर छाले हो गये।
पति-यह तो होना ही था। उसे कभी आराम भी
करने दिया करो।

कोई फर्क नहीं पड़ता है
ताज फैंके, तख्त तौड़े,
गौतम और गांधी न छोड़े,
पाप को फिर-फिर पछाड़ा
स्वार्थ को बैमोत मारा
प्यार गांधी बन गया है
शत्रु की ललकार पर
माटी का कण-कण
वीर सपूत बन
सर हथेली रखे
युद्ध में लड़ता है।

- हर्ष निवास, समीप गंभीर गाइड स्कूल,
दयानन्द नगर, बहादुरगढ़, झज्जर, हरियाणा

वास्तुदोष और वास्तु शास्त्र

वास्तु शास्त्र वह विज्ञान है जो शाला अर्थात् भवन निर्माण में आवश्यक है। सृष्टि के आरम्भ में वेद ने इसे दिया है। वेद के इन मन्त्रों से भवन निर्माण की शिखा लेकर हमारे ऋषि मुनियों ने भी इस ज्ञान का अपनी रचनाओं में पर्याप्त अनुसंधान कार्य किया है। इससे उनका मुख्य आशय भवनों को सुदृढ़, हवादार, सूर्य की किरणों के प्रवेशक तथा भिन्न-भिन्न कार्यों हेतु भिन्न-भिन्न कक्ष निर्मित करने का है। उन्होंने कही नहीं लिखा कि इससे विपरीत कर देने से अनिष्ट होगा।

अनिष्टों को दूर करने के अनुष्ठान भी चल निकले। वास्तुदोष के नाम पर दिशाओं का प्रभाव लोगों के घरों पर, कार्यालयों और कारखानों में घुसने लगा है। अपने पुरुषार्थ और भाग्य पर भरोसा न करके अपने दुःखों का, आर्थिक हानि और पराजय का कारण अपने कमरों की दीवारों, कोनों और दिशाओं की भूल में ढूँढने लगे हैं। वास्तुशास्त्र के ज्ञाता के नाम पर लोगों का धंधा चल निकलता है। सामान्य सिद्धांत यह है कि पुरुषार्थ और भाग्य के फलस्वरूप व्यक्ति का फलाफल बदलता रहता है। किसी शुभ बदलाव का श्रेय तथाकथित वास्तु पंडितों को देना अंधविश्वास को बढ़ावा देना है।

गुरुडमः- शास्त्रों में प्रत्येक मनुष्य के लिए गुरु का बड़ा महत्व है। आध्यात्मिक क्षेत्र में जो आत्मिक, उन्नति हेतु सद्विज्ञान व शास्त्रों की बातें बताता है, वह गुरु कहलाता है। शिष्यों को आत्मा परमात्मा का ज्ञान देकर संवारता है।

वर्तमान काल में गुरुडम का बोलबाला हो गया है। गुरुओं की अनेक दुकानें खुल गई हैं। भोली भाली जनता गुरुओं के भ्रमजाल में फंसी हुई है। ईश्वरीय पूजा के स्थान पर अपनी पूजा करवाते हैं। गुरु बनाने के नाम पर बहुत से लोग विशेषकर महिलायें भेड़िया घसान की तरह गुरु सेवा में अर्पित हो जाने के बहाने बहुत अविद्या में फंसी है। ईश्वर के प्रति समर्पण भावना से हटाकर अपने प्रति समर्पण कराकर गुरुओं

- श्रीमती सुशीला गुप्ता, रांची झारखण्ड ने शोषण तक किया है। पाप कर्म बढ़ते जाते हैं। बाद में ऐसे गुरुओं के कारनामों का भंडाफोड़ होने पर मन पर गहरी चोट लगती है।

सत्य असत्य को जानो- 19वीं सदी के महान समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने जहां वेद उद्धार कर सत्य की राह दिखाई, वहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष में भ्रमण कर देश, समाज में फैले पाखंड, कुरीतियों, भ्रमों भ्रांतियों व अन्ध विश्वास में ग्रसित देशवासियों की दयनीय दशा को देखा और दृढ़ संकल्प के साथ पाखंडों का खंडन करने हेतु एक ज्वलन्त पताका फहराई। सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर पाखंड व अंधविश्वास के निर्मूलन हेतु एक महा अभियान का श्रीगणेश किया। पाखंडों व अंधविश्वासों के अतिरिक्त भी भिन्न-भिन्न प्रकार की कुरीतियों व गलत परम्पराओं ने अपनी जड़ पकड़ रखी है-उदाहरणार्थ मंदिर में पशुबलि प्रथा, सूर्य ग्रहण चंद्रग्रहण के दुष्प्रभाव, मसानी व मजार पूजा, पीर-फकीर की मजार पर चादर चढ़ाना व मनौतियाँ, भ्रूण हत्या, कन्टी माला, मन्दिर से सुरापान, तीर्थों का प्रचलन, भागवत व रास लीला, बाल विवाह, पीपल वृक्ष पूजन, तुलसी विवाह, मृतक भोज, डोरा ताबीज, भटकती आत्मा, शनि का दुष्प्रभाव, माता का आना, झाड़फूंक, अमावस्या को अशुभ मानना, पिण्डदान, बुरी नजर, हस्तरेखा-ललाटेरेखा आदि आदि छोटे बड़े वहम और भ्रांतियाँ हैं। स्वामी दयानन्द के जागरूक सिपाही की भूमिका में आर्य समाज जहां समाज सुधार व मानव निर्माण के कार्यों में संलग्न है, वहीं देश व समाज में फैले पाखंड, अंधविश्वास कुरीतियों के उन्मूलन के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञा हैं तथा आम नागरिकों को उनके प्रति सचेत रहने के लिए अपना पावन कर्तव्य समझता है व सत्संगों, प्रवचनों व साहित्य के द्वारा इनके उन्मूलन में लगी है।

आओ हम सब मिलकर एक भय मुक्त पाखण्ड रहित राष्ट्र व समाज के निर्माण में आर्य समाज का साथ दें।

वह महामानव कौन था जिसने भगत सिंह को शहीदे आजम भगत सिंह बना दिया

-कन्हैयालाल आर्य, ट्रस्ट उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़



कन्हैया लाल आर्य

पंजाब के जिला लायलपुर की धरती सचमुच वन्द्य है, जिसमें न जाने कितने ऐसे वीर पुत्रों को जन्म दिया, जिन्होंने हंसते-हंसते मां भारती की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की बलि दे दी। इसी लायलपुर के एक गांव बंगा में एक सिक्ख परिवार रहता था, जिसने आगे चलकर अपनी क्रांतिकारी परम्पराओं से भारतीय इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा। इसी परिवार में सरदार अर्जुनसिंह पैदा हुए थे। सरदार अर्जुन सिंह अपने ही ढंग के क्रांतिकारी थे वे जाट सिक्ख थे, परन्तु स्वामी दयानन्द जी से जब उनकी भेंट हुई तो वे आर्य समाज की ओर झुक गए। यह कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द जी ने उन्हें स्वयं दीक्षा दी और अपने हाथ से उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया था।

यही सरदार अर्जुन सिंह जी ही थे, जिन्होंने अपने पोते भगत सिंह को क्रांतिकारी विचारों के संस्कार दिये। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के कुछ ही दिनों उपदेशों के प्रभाव से वे स्वाधीनता संग्राम और समाजसुधार की क्रांति के अग्रदूत बन गए थे। उन्होंने अपने वंश को देश की आजादी के लिए बलिदान कर दिया।

सरदार अर्जुन सिंह और शिवाजी समारोह-12 जून 1897 को शिवाजी समारोह पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए लोक मान्य तिलक ने जो भाषण दिया था वह भी सरदार अर्जुन सिंह के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। वह भाषण इस प्रकार था।

क्या शिवा जी ने अफजल खान को मारकर कोई पाप किया था?

इस प्रश्न का उत्तर महाभारत में मिल सकता है। गीता में श्री कृष्ण जी ने अपने गुरुओं तथा बान्धवों तक को (यदि वे दुष्टों का सहयोग करते हैं) मारने का उपदेश दिया है। उनके अनुसार कोई व्यक्ति

निष्काम भाव से कर्म करता है तो वह किसी भी तरह पाप का भागी नहीं बनता। श्री शिवाजी ने अपने उदर पूर्ति के लिए कुछ नहीं किया था। बहुत ही नेक इरादे के साथ, दूसरों की भलाई के लिए उन्होंने अफजल खान का वध किया था। यदि घर में चोर घुस आये और हमारे अन्दर उनको बाहर निकालने की शक्ति न हो तो हमें बेहिचक उस चोर को दरवाजा बन्द करके जिन्दा जला देना चाहिए। ईश्वर ने भारत के राज्य का पट्टा ताम्रपत्र पर लिखकर विदेशियों को तो नहीं दिया। शिवाजी महाराज ने उनको अपनी जन्मभूमि से बाहर खदेड़ने का प्रयास किया। ऐसा करके उन्होंने दूसरों की वस्तु हड़पने का पाप नहीं किया। कुएँ के मेंढक की तरह अपनी दृष्टि को संकुचित मत करो, ताजीराते हिन्द की कैद से बाहर निकलो, श्रीमद्भगवद्गीता के अत्यन्त उच्च वातावरण में पहुँचो और महान व्यक्तियों के कार्यों पर विचार करो।"

सरदार अर्जुन सिंह सिक्ख परिवार के होते हुए भी संस्कारों से दृढ़ आर्य समाजी बन गए थे। वे जहाँ भी जाते, अपने साथ एक पोटली रखते थे, जिसमें यज्ञकुण्ड और यज्ञ सम्बन्धी समान रहता था। वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे। वे पूरी निष्ठा और गम्भीरता से महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' का स्वाध्याय किया करते थे।

सरदार अर्जुन सिंह उन थोड़े लोगों में से थे जो जिस काम को हाथ में लेते थे, उसे पूरा करके दिखाते थे। साधारण व्यक्ति का जीवन एक ही लीक पर परवान चढ़ता है। जिस परिवार और परिस्थितियों में व्यक्ति उत्पन्न होता है वह आजीवन उन्हीं से चिपटा रहता है। यदि वह स्वतन्त्र चिन्तन करने का प्रयास करता है तो भी वह सीमित चारदीवारी के बीच में, कैद रह कर ही रह जाता है। यदि वह चिन्तन के क्षेत्र में थोड़ा बहुत स्वतन्त्र चिन्तन प्रदर्शित करता भी है तब भी वह उसे व्यवहार में परिणत नहीं कर सकता, परन्तु सरदार अर्जुन सिंह तो स्वतन्त्र पथ के ऐसे पथिक थे जो न तो एक ही लीक पर चलने वाले थे,

और न ही एक चारदीवारी में कैद रहने वाले। वह ऐसे महानुभाव थे जिन्होंने अपने स्वतन्त्र चिन्तन को अपने जीवन के व्यवहार में उतारने में ही आनन्द का अनुभव किया था।

‘सत्यार्थ प्रकाश’ (आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रमुख ग्रन्थ) के प्रति उनकी अपार श्रद्धा थी। उस ग्रन्थ से उन्होंने स्वराज्य प्रेम की प्रेरणा ली थी। यही स्वराज्य भावना उनके तीनों पुत्रों श्री किशन सिंह, श्री अजीत सिंह और श्री स्वर्ण सिंह में कूट-कूट कर भरी गयी थी। स्वराज्य के लिए तीनों पुत्रों ने कारावास भोगा, जेल की यातनाएं सहरी। जैसे ही भगतसिंह के पिता श्री किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह तथा स्वर्ण सिंह जी के जेल से रिहा होने की खबर पहुँची, उसी दिन भगत सिंह का जन्म (28 सितम्बर 1907) हुआ था। उनकी दादी अर्थात् अर्जुन सिंह की पत्नी ने प्रसन्न होकर उन्हें (भागों वाला) भगत सिंह नाम दिया। बचपन से ही उनका पालन-पोषण दादा जी की छत्र छाया में हुआ।

भगत सिंह की दादी भी एक धार्मिक महिला थी। यही संस्कार एवम् परम्पराएं भगत सिंह में भी आयी। तीन वर्ष की अवस्था में भगत सिंह ने गायत्री मन्त्र स्मरण कर लिया था। भगत सिंह व उनके बड़े भाई जगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार प. लोकनाथ तर्कविद्यावाचस्पति जी ने कराया। इस अवसर पर भगत सिंह के दादा श्री अर्जुन सिंह जी ने अपने दोनों पोतों को बाहों में भरकर संकल्प किया, “मैं अपने दोनों वंशधरों को इस यज्ञवेदी पर खड़ा होकर देश के लिए दान करता हूँ।”

सिक्ख मत के अनुयायी होते हुए भी आर्य समाज के प्रबल समर्थक थे- गुरुद्वारा आन्दोलन में भाग लेने से पूर्व भगत सिंह न तो सिर पर केश रखते थे और न ही पगड़ी बांधते थे। इसका कारण सम्भवतः उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह के सिक्ख होते हुए भी बहुत कुछ आर्य समाजी होना था। वे नियमित रूप से यज्ञ करते थे और सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय भी करते थे। इस सम्बन्ध में श्री यशपाल जी ने ‘सिंहावलोकन’ में एक रोचक प्रसंग का उल्लेख

किया है जिसका शब्दशः यहां उल्लेख किया जा रहा है। इससे सरदार अर्जुन सिंह जी की आर्य समाज के प्रति आस्था अच्छी तरह स्पष्ट हो जायेगी।

“सन् 1925 के जाड़ों की बात है। सरदार किशन सिंह एक इंश्योरेंस कम्पनी की एजेन्टी कर रहा था। एजेंसी का यह दफ्तर हमारे लिए अराम का डेरा बना हुआ था। मैं उन दिनों लाहौर के नेशनल स्कूल में पढ़ रहा था। नेशनल कॉलेज समाप्त होकर नेशनल हाई स्कूल ही रह गया था। भगतसिंह अनिच्छा से थोड़ा बहुत समय कारोबार में लगाता। शेष समय पढ़ता और संगठन के लिए भूमि का तैयार करने में लगा रहता। सुखदेव कभी लायलपुर अपने घर पर चला जाता। वहां उसके परिवार ने आटे की चक्की दी थी। लाहौर आता तो भगतसिंह के साथ ही बना रहता। हमारे सहपाठी झंडासिंह और जयदेव गुप्ता भी वहीं थे।

“एक दिन स्कूल में छुट्टी थी। दूसरे लोग मकान पर मौजूद नहीं थे। मैं अपनी सनक में मेज पर बैठा कोई लेख या कहानी लिख रहा था। मेज के नीचे टीन की क्या चीज पड़ी है, वह ख्याल न कर उस पर जूते जमा कर रख दिये थे। संभव है अचेतन रूप से यह धारण रही हो कि रद्दी की टोकरी के तौर पर कोई डिब्बा है। लिखते समय विचारों को ठेलने के लिए मेज के नीचे उस टीन की चीज को जूते से एड़ किए जा रहा था। (शेष अगले अंक में)

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम “दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर”। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

—व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

आचार्य चारुदत्त जी मॉरीशस	8000/-
श्री रमीकेश जी गद्दीसांपला रोहतक	5100/-
गद्दी सांपला ग्राम से यज्ञ अवसर पर प्राप्त	4362/-
प्रि. कर्ण सिंह जी डबास माजरा दिल्ली द्वारा संग्रह	4000/-
श्री ओम प्रकाश गुप्ता अशोक विहार दिल्ली	3100/-
आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी दिल्ली	3100/-
श्रीमती सविता देवी आर्य पत्नी श्री महेन्द्र पाल आर्य	
बहादुरगढ़, जिला-पटियाला पंजाब	3100/-
श्री योगेश जी सुपुत्र श्री वेदपाल जी नेहरू पार्क, बहा.	2100/-
श्री भगत सिंह जी दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़	2100/-
श्री जगफल सिंह जी सुपुत्र श्री मंशीराम जी गद्दी सांपला	2100/-
श्री वेद प्रकाश जी आर्य उत्तम नगर दिल्ली	2100/-
श्रीमती विमलेश फौगट करनाल हरियाणा	2000/-
श्री धर्मसिंह सुपुत्र श्री रामगोपाल जी ग्राम छावला दिल्ली	1600/-
श्री रविन्द्र कुमार जी लीखा एम.आई.ई. बहादुरगढ़	1100/-
मा. रामफल जी अवकाश प्राप्त पाना हिन्दयान बेरी	1100/-
श्री विनय जी माहेश्वरी माडल टाऊन बहादुरगढ़	1100/-
श्री महेन्द्र जी सुपुत्र श्री मुंशीराम जी गद्दी सांपला	1100/-
श्री दरबारी लाल जी गुलिया सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
"कर्मल राजेन्द्र जी सहरावत" सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
योगेश लाकड़ा जी मुण्डका दिल्ली	1100/-
श्री विक्रम ओहल्याण सु. श्री विनोद ओहल्याण गद्दी सां.	1100/-
श्री रामप्रताप जी आर्य नरबाना हरियाणा	1100/-
श्रीमती मायावती मदान, धर्मपुरा, बहादुरगढ़	1100/-
श्री रवि कुमार जी आर्य अंजनी कंसलटेन्सी, बहादुरगढ़	1001/-
श्रीमती रामदुलारी बंसल वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	1000/-
मेछाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी शर्मा बराही रोड, बहा.	1000/-
सिद्धान्त सुपुत्र डॉ. राजवीर सिंह दलाल सैक्टर-6, बहा.	1000/-
मा. दलबीर सिंह जी आर्य, सैक्टर-2, बहादुरगढ़	850/-
मा. रोशनलाल जी सैक्टर-8, रोहिणी दिल्ली	600/-
स्व. महावीर सिंह जी परिवार द्वारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	501/-
श्री नीरज सुपुत्र श्री रामफल जी डागर निलोटी झज्जर	500/-
श्री तेजवीर जी भाटी ददारी कटहेड़ा, उत्तर प्रदेश	500/-
श्री प्रदीप सिंह जी दांगी करनाल हरियाणा	500/-

विशिष्ट भोजन

श्री राजसिंह जी डबास माजरा दिल्ली । समय का विशिष्ट भोजन

श्री हरिओम ततसत् अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़

1 समय का विशिष्ट भोजन

श्रीमती मायावती मदान आर्या धर्मपुरा, बहादुरगढ़

1 समय का विशिष्ट भोजन

पं. शिव कुमार जी कानौन्दा

1 समय का विशिष्ट भोजन

विविध वस्तुएं

फरिश्ता सॉप एण्ड चरखा कैमिकल फैक्टरी

200/- रुपये, साबुन दो पेटी

श्री दीपेन्द्र जी डबास शानि मन्दिर टीकरी कला, दिल्ली

2 टीन तेल सरसो

सत्संग मंडली शंकर गार्डन बहा. 50 किलो गेहूं, 5 किलो चीनी,

5 किलो गुड़, 5 किलो चावल, 12 पैकेट बिस्कुट

श्री दीपक जी शर्मा, बराहना

5 किलो दाल

श्री जयप्रकाश जी जिन्दल दयानन्द नगर, बहा.

25 किलो चावल

श्रीमती उषा दीक्षीत दयानन्द नगर, बहादुरगढ़

आटा 20 किलो,

चावल 5 किलो, दाल 2 किलो, हल्दी नमक

मिर्च रिफाईन्ड 1 किलो

श्री बाबु सिंह दयानन्द नगर बहादुरगढ़

7 छतरी

अन्न प्राप्त

टुक युनियन परनाला रोड, बहादुरगढ़

4 क्विंटल गेहूं

श्री देवेन्द्र राठी सुपुत्र श्री कंवल सिंह जी परनाला बहादुरगढ़

100 किलो गेहूं

शिव टूबों टुक युनियन, बहादुरगढ़

5 क्विंटल गेहूं

बिहारी लाल राजेन्द्र प्रसाद अनाजमण्डी बहादुरगढ़

50 किलो गेहूं

श्री मनुदेव जी शास्त्री सैक्टर-6 बहादुरगढ़

1 बोरी गेहूं

श्री दयाकिशन जी राठी 8 विश्वा बहादुरगढ़

1 क्विंटल गेहूं

श्री विश्वनाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी बहादुरगढ़

2 बोरी गेहूं

श्री राजसिंह राठी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़

2 बोरी गेहूं

श्री सत्यवीर सिंह राठी, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

1500/- रुपये

पं. राजकुमार जी श्री भूप सिंह जी परनाला

1 बोरी गेहूं

मा. जयसिंह जी दयानन्द नगर, बहादुरगढ़

80 किलो गेहूं

विविध अन्न प्राप्त

श्री जगफल सिंह जी सुपुत्र श्री मुंशीराम जी गद्दी सांपला

40 किलो गेहूं

श्री महेन्द्र जी सुपुत्र श्री मुंशीराम जी गद्दी सांपला गेहूं 60 किलो,
दाल 5 किलो, चावल 7 किलो, चीनी 5 किलो, खांड 3 किलो
श्री प्रकाश जी सुपुत्र श्री रामचन्द्र जी गद्दी, सांपला 40 किलो गेहूं
श्री राजपाल जी सु. श्री सुलतान सिंह गद्दी सांपला 40 किलो गेहूं
श्री देवेन्द्र कुमार जी राठी सुपुत्र श्री कंवर सिंह जी परनाला

1 बोरी गेहूं

माजरी गांव

श्री महेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री शीशराम जी माजरी 40 किलो गेहूं
श्री चांदीराम जी सुपुत्र श्री ब्रह्मा जी माजरी 50 किलो गेहूं
डा. चांदराम सुपुत्र श्री दिलपत जी माजरी 20 किलो गेहूं
श्री सुभाष जी सुपुत्र श्री रणजीत सिंह जी माजरी 1 बोरी गेहूं
श्री नरेन्द्र सुपुत्र श्री मांगेराम जी माजरी 1 बोरी गेहूं
श्री खजान सिंह सुपुत्र श्री महासिंह जी माजरी 1 बोरी गेहूं
श्री उमेश सिंह जी आर्य माजरी 1 बोरी गेहूं
श्री समेराम जी आर्य माजरी 1000/- रूपये
मा. करतार सिंह जी माजरी 500/- रूपये

गौशाला

श्रीमती सरला देवी जी पत्नी श्री महावीर प्रसाद जी
अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़ 5100/-
श्रीमती मायावती मदान धर्मपुरा बहादुरगढ़ 1100/-
श्री भगतसिंह दहिया नेहरू पार्क, बहादुरगढ़ 1100/-
श्रीमती रमन देवी अबरोल पश्चिम विहार दिल्ली 500/-
श्रीमती कौशल्या देवी सैक्टर-6 500/-
श्री योगेश जी सुपुत्र श्री जयपाल जी महावीर पार्क, बहा. 500/-
श्री वीरेन्द्र सिंह जी नांगलोई दिल्ली 500/-

गांव टीकरी कला से अन्न व रूपये प्राप्त

श्री राधेकृष्ण एसोसिएट घेवरा मोड़, दिल्ली 21000/-
स्व. श्रीमती बालादेवी पत्नी मा. करतार सिंह जी आर्य. 11000/-
श्री राम निवास (काला) सुपुत्र श्री सुरत सिंह 70 किलो गेहूं
श्री सिंघराम सुपुत्र श्री रोहतास जी 50 किलो गेहूं
दरियाव धर्मकांटा 50 किलो गेहूं
श्री विजय पाल सुपुत्र श्री रामपत 50 किलो गेहूं
श्री महेन्द्र सिंह (फौजी) सुपुत्र श्री छत्तर सिंह 50 किलो गेहूं
श्री सुखवीर सुपुत्र श्री टेक चन्द्र 50 किलो गेहूं
श्री महेन्द्र सिंह नम्बरदार सु. श्री जागेराम 50 किलो गेहूं
श्री राज सिंह सुपुत्र श्री सुलतान सिंह (साहब) 1 बोरी गेहूं
श्री जितेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री दलेल सिंह 1 बोरी गेहूं

श्री श्याम पण्डित जी सुपुत्र पं. शिव कुमार जी

1100/-+50 किलो आटा

श्री सत्यवान सुपुत्र श्री सूरज भान सिंह जी 1 बोरी गेहूं
श्री अजित सिंह सुपुत्र श्री चौ. मुंशीराम जी 5100/-
श्री प्रदीप जी सुपुत्र श्री विजेन्द्र सिंह टीकरी दिल्ली 3100/-
लव सिंह अमर सिंह सैलपाड़ 2121/-
श्री धर्मपाल जी सिंडीकेट प्रोपर्टी मुण्डका दिल्ली 2100/-
श्री मदन लाल शर्मा सुपुत्र स्व. श्री रामचन्द्र जी शर्मा 2100/-
देशी सुपुत्र श्री अनुप सिंह 2100/-
श्री ऋषि चेंबरमैन सुपुत्र श्री दरियाव सिंह 2100/-
श्री ऋषि पाल (फौजी) सुपुत्र श्री सूरत सिंह 2100/-
स्व. पं. फूल कुमार सुपुत्र श्री रूपी 2100/-
श्री सुरेश कुमार, नरेश कुमार सुपुत्र श्री पं. रतन कुमार 2100/-
श्री राजेन्द्र सिंह आकाश बांडी विल्डर्स 2100/-
श्री कुलदीप, दलवीर सुपुत्र श्री शीशपाल (मास्टर) 2100/-
श्री राकेश कुमार सुपुत्र श्री बलवान सिंह 2100/-
कार्तिक दराल सुपुत्र श्री रमेश कुमार दराल 2100/-
श्री विरेन्द्र सिंह सुपुत्र श्री सरदार सिंह 2100/-
मोहित धर्मकांटा 2000/-
श्री तेजपाल सिंह सुपुत्र श्री जिले सिंह प्रधान 1700/-
श्रीमती हरनन्दी देवी टीकरी कला दिल्ली 1600/-
श्री धर्मवीर जी दराल सुपुत्र श्री भूदेव जी 1600/-
श्री अजित सिंह सुपुत्र श्री सूरत सिंह 1600/-
श्री रमेश कुमार सुपुत्र श्री विरेन्द्र सिंह 1600/-
मा. उमेश सिंह सुपुत्र श्री चौरंजी 1600/-
श्री बलराज सिंह सु. स्व. श्योदान सिंह 1600/-
श्री संजय जी (सरपंच) सुश्री राम किशन (गद्दी सांपला) 1600/-
श्री प्रियव्रत सुपुत्र श्री दलेल सिंह 1600/-
श्री नरेश कुमार दराल सुपुत्र श्री मांम चन्द जी दराल 1600/-
श्री धीर सिंह सुपुत्र श्री राम पत 1600/-
श्री रमेश कुमार थानेदार सु. श्री महासिंह स्वतन्त्रता सेनानी 1600/-
श्री चन्द्रपाल सिंह सुपुत्र श्री मांगेराम जी 1600/-
श्री सत्यवीर सिंह डागर सुपुत्र श्री ठोलेदार 1600/-
चांदराम गांव समसपुर 1600/-
श्री अनिल कुमार सुपुत्र श्री राजेन्द्र सिंह 1600/-
कमल मलिक सुपुत्र श्री गुलशन कुमार (नांगलोई) 1600/-
श्री रणवीर सिंह सुपुत्र श्री जिलेसिंह प्रधान 1100/-
श्री सत्यवान सुपुत्र श्री सत्यवीर सिंह 1100/-
श्री सुखवीर सिंह सुपुत्र श्री चरण सिंह 1100/-
तरुण कुमार सुपुत्र श्री सुरेन्द्र सिंह 1100/-

श्री परमजीत सुपुत्र श्री स्व. रोहतास	1100/-
मंजीत सिंह सुपुत्र श्री जय किशन (थानेदार)	1100/-
श्री बलजीत सिंह सुपुत्र श्री ख्यालीराम	1100/-
श्री अजित सिंह सुपुत्र श्री सुरजभान (नीलवाल)	1100/-
देव शंकर स्टोक	1100/-
बिरखा प्लास्टिक	1100/-
श्री ईश्वर सिंह सुपुत्र श्री जीता	1100/-
श्री विल्लु सुपुत्र श्री जगदीश जी	1100/-
श्रीमती रतनी देवी पत्नी श्री अन्तर सिंह	1100/-
श्रीकृष्ण कुमार सु. होशियार सिंह	1100/-
ऋषि प्रकाश फौजी सुपुत्र श्री प्रकाश	1000/-
श्री भगवान जी सुपुत्र श्री पं. राजेन्द्र जी	800/-
उज्जवल सुपुत्र श्री दलेल सिंह	800/-
राजधानी स्टोक	800/-
श्री धर्म सिंह सुपुत्र श्री सुरत सिंह	800/-
गौरव, गोविन्द सुपुत्र श्री जय सिंह बागड़ी	800/-
श्री सुरजमल साहब सुपुत्र श्री जीत राम	510/-
श्री रामफल सुपुत्र श्री पं. नेतराम जी	505/-
श्री धर्मसिंह सुपुत्र श्री राममेहर जी	501/-
स्व. श्री दीवान चन्द्र अग्रवाल	501/-
श्री प्रवेश कुमार सु. श्री जोगिन्द्र सिंह (लडरावण)	501/-
श्री राज कुमार सुपुत्र श्री सुभाष चन्द्र	501/-
नेताजी मांगेराम शर्मा सुपुत्र श्री मौजीराम	501/-
श्री सचिन सुपुत्र श्री ज्ञान चन्द्र	500/-
पं. राधेश्याम सुपुत्र श्री धर्मसिंह	500/-
एडवोकेट श्री प्रकाश जी सु. श्री राममेहर जी	500/-
श्री राममेहर सुपुत्र श्री जयपाल जी	500/-
श्री नरेन्द्र जी (कुक्कु) सुपुत्र श्री जय किशन जी	500/-
श्री धर्मसिंह सुपुत्र श्री भूदेव जी	500/-
पं. कृष्ण चन्द्र सुपुत्र श्री उदय सिंह	500/-
श्री मा. रतन प्रकाश सुपुत्र श्री राम सिंह	500/-
श्री पहलवान नैदर सिंह	500/-
श्री धर्मपाल सिंह सुपुत्र श्री सूबे सिंह	500/-
श्री धर्मपाल सिंह सुपुत्र श्री सुलतान सिंह	500/-
श्री अशोक	500/-

ओ३म्

- मनुदेव वानप्रस्थी, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़



ईश्वर प्रदत्त है यह जिन्दगी।
श्रेष्ठता में उसकी नहीं कोई सानी॥

शशी, भानु-तारे उसी ने बनाये,
धरती पर कितने है दरिया बहाये,
रमणीय हैं सारी ऋतुएं सुहानी।
श्रेष्ठता में उसकी नहीं कोई सानी॥

वह अक्षर, अविनाशी, तेजोमय है ईश्वर,
वेदों का रचियता, सृष्टा जगदीश्वर,
महिमा कितनी है हमने न जानी।
श्रेष्ठता में उसकी नहीं कोई सानी॥

काल का घोड़ा बड़ा शक्तिशाली,
विश्व के रथ को चलाता बलशाली,
संयमशील व कान्त द्रष्टा की है अलग कहानी।
श्रेष्ठता में उसकी नहीं कोई सानी॥

यम, नियम पर चलें सभी जन,
सत्याचरण से पवित्र हो सभी मन,
मनुदेव ने मन में यही है ठानी।

ईश्वर प्रदत्त है यह जिन्दगी।
श्रेष्ठता में उसकी नहीं कोई सानी॥

श्री सतीश कुमार सुपुत्र श्री धर्मसिंह सेलपाड़	251/-
श्री सत्यपाल जी सुपुत्र श्री करतार सिंह	251/-
श्री सुभाष (भोला)	251/-
डॉ. फरकान अलि	251/-
श्री नगेन्द्र सिंह सु. श्री विरेन्द्र सिंह	201/-
फूल कुमार देवी सिंह	100/-
श्री चांद सिंह सुपुत्र श्री महासिंह जी	100/-
मा. राज सिंह सुपुत्र स्व. श्री मूलचन्द	100/-
मा. कपूर सुपुत्र श्री राम चन्द्र	100/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झरझर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 जून 2017 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

!! ओ३म् !!

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

निःशुल्क सरल आध्यात्मिक शिविर

शुक्रवार 30 जून से रविवार 2 जुलाई 2017 तक

सानिध्य:- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज (मुख्यअधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़)

योग निर्देशक:- स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक दर्शनाचार्य (योग विशारद दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात)

शिविर दिनचर्या 30 जून और 1 जुलाई 2017

प्रातः 7 बजे से 8 बजे तक **यज्ञ-भजन।**

8 बजे से 9 बजे तक **क्रियात्मक योग** विषय प्रवक्ता स्वा. विवेकानन्द जी

मध्याह्न में 11 बजे से 12 बजे तक विषय योगदर्शन अध्ययन

सायं 4 बजे से 6 बजे तक **यज्ञ-भजन**

6 से 7 बजे तक विषय योगदर्शन

रात्रि 8.30 से 9.30 तक विषय शंका समाधान।

रविवार 2 जुलाई 2017

प्रातः 8 बजे से **पूर्णाहुति एवम् शिविर समापन समारोह** 11 बजे से 12 बजे तक

स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा क्रियात्मक योग विषय प्रवचन।

नोट- -शिविर मध्य महिलाएं भी भाग ले सकती हैं। ☐ शिविरार्थी अपना आवश्यक सामान ऋतु अनुसार बिस्तर एवम् कॉपी, पैर, योगदर्शन, टॉर्च आदि साथ लेकर आए। ☐ भोजन, आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। ☐ शिविरार्थी आने से पूर्व सूचित अवश्य करें। आश्रम दिल्ली रोड पर बस स्टैंड के निकट है। **संयोजक: स्वामी रामानन्द सरस्वती, मो. 9354155357**

आगामी आयोजित योगशिविर एवं यज्ञोत्सव कार्यक्रम

(1) आश्रम का स्वर्णजयन्ति महोत्सव आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी चितेश्वरानन्द जी सरस्वती योग-यज्ञ विशेषज्ञ की अध्यक्षता में योग साधना एवं चतुर्वेद ब्रह्म पारायण बृहदयज्ञ 1 सितम्बर शुक्रवार से आरम्भ होने पर 2 अक्टूबर सोमवार 51 कुण्डों में यज्ञपूर्णाहुति। इस शुभावसर पर आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहने की दीक्षा, गृहास्थश्रम त्याग वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा और संन्यास आश्रम की दीक्षा लेने वाले इच्छुक बन्धु सम्पर्क करें। अत्यन्त प्रभावशाली दीक्षा समारोह का आयोजन विशाल स्तर पर तथा भव्य स्मारिका का प्रकाशन होना है। आप सभी से निवेदन है कि स्मारिका में प्रकाशनार्थ अपने लेख और अपनी फर्म के विज्ञापन प्रकाशनार्थ भेजकर स्मारिका की शोभा बढ़ाएं और कार्यकर्ताओं को उत्साहित करें।

(2) पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज मुख्यअधिष्ठाता के 82वें जन्मदिवस पर बृहद्, यज्ञ एवम् निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन 20 नवम्बर सोमवार को विशाल स्तर पर किया जाएगा।

सम्पर्क सूत्र: 9416054195, 9896578062

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

जून 2017

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2015-17

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

जन्मदिवसों पर आश्रम को वस्तुएं भेंट की गईं



1. श्री अक्षय गहलोत ग्राम तलाब, झज्जर हरियाणा द्वारा सुपुत्र चिरञ्जीवरण अजय के जन्मदिवस पर 1 पंखा, बच्चों के लिए कॉपी, पैन, स्टेसनरी मान चित्र प्रदान किए गए।
2. श्री अंकूर जी गहलोत गांव तलाब, जिला-झज्जर द्वारा अपने जन्मदिवस पर 20 बैडसीट चादरें, लूडो, बैटमिन्टन, बल्ले 4, चिड़िया 1 डब्बा, केरम बोर्ड फजल भेंट किए गए।



श्री दिवांशु जी गुप्ता एक्टुए लाईट शू प्राइवेट लिमिटेड सैक्टर 17, बहादुरगढ़ द्वारा 3 बड़े कूलर भेंट किए गये। कम्पनी द्वारा आश्रम को लगभग एक वर्ष से मध्याह्न का भोजन प्रदान किया जा रहा है।